डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-aadhuniksamachar2014@gmail.com website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG,5

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

PG,8

सिनेमाः बप्पी लहरी का निधन मुंबई के अस्पताल में जी अंतिम सांस

वर्ष -07 अंक -342 | प्रयागराज, गुरूवार 17 फरवरी, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

तेलंगाना के मुख्यमंत्री का बयान गलत

नई दिल्ली। केंद्रीय ऊर्जा मंत्री आर के सिंह ने मंगलवार को तेलंगाना के मुख्यमंत्री द्वारा दिए गए बयान को खारिज कर दिया। दरअसल मुख्यमंत्री ने नवीकरणीय ऊर्जा के संबंध में बयान दिया था। केंद्रीय मंत्री ने स्पष्ट किया कि राज्य अपनी बोली आयोजित करने तथा उसके आधार पर नवीकरणीय ऊर्जा खरीदने को स्वतंत्र है। बिजली और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री सिंह ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव के 11 फरवरी को जनगांव जिला मुख्यालय में दिये गये एक भाषण के संदर्भ में यह बात कही। उन्होंने अपने संबोधन में कहा था कि केंद्र सरकार राज्यों पर विशेष कंपनियों से अक्षय ऊर्जा खरीदने के लिए दबाव डालती है। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने आर के सिंह के हवाले से बताया 'यह पूरी तरह गलत है।' बयान के अनुसार, राज्य स्वयं से बोलियां रखने और उन बोलियों के आधार पर किसी भी कंपनी से अक्षय ऊर्जा खरीदने के लिए स्वतंत्र हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की सोलर एनर्जी कापीरेशन आफ इंडिया (सेकी) भी समय समय पर नवीकरणीय ऊर्जा के लिये बोलियां आमंत्रित करती है।

असम के शहरों कस्बों और गांवों के नाम बदलने पर सरकार कर रही है विचार

गुवाहाटी। शहरों, कस्बों और गांवों के नाम बदलने की प्रथा से शुरु हो गई है। उत्तर प्रदेश में धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व के आधार पर शहरों के नाम बदलने के बाद, देश के अन्य राज्यों में यह कल्चर शुरू हो गया है। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने बुधवार को कहा कि राज्य सरकार शहरों, कस्बों और गांवों के नाम बदलने पर लोगों के सुझाव लेगी, जिसके लिए एक पोर्टल शुरु किया जाएगा, जो भारत की संस्कृति और सभ्यता के विपरीत और किसी भी जाति या समुदाय के लिए 'अपमानजनक' है। हैंडल से आज सुबह एक ट्वीट कर कहा कि राज्य हर शहर, कस्बा या गांव का नाम उसकी संस्कृति, परंपरा और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।

पीएम मोदी ने करोल बाग के रविदास विश्राम धाम मंदिर टेका माथा, 'शबद कीर्तन' में लिया भाग

नई दिल्ली। देशभर में आज रविदास जयंती मनाई जा रही है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी करोल बाग स्थित श्री गुरु रविदास विश्राम धाम मंदिर पहुंचे। मोदी ने मंदिर में पूजा अर्चना की और माथा टेका।पीएम मोदी के कार्यक्रम को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था चुस्त की गई है। इससे पहले, पीएम मोदी ने मंगलवार कहा था कि पीएम ने कहा था कि संत रविदास ने जातिवाद और छुआछूत जैसी कुरीतियों को खत्म करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। पीएम ने ये भी कहा कि मेरी सरकार ने हर कदम और योजना में गुरु रविदास की भावना को आत्मसात किया है संत रविदास जयंती के मौके पर करोल बाग के श्री गुरु रविदास विश्राम धाम मंदिर में श्रद्धालुओं के साथ भजन में हिस्सा लेते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। सोर्स दूरदर्शन) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संत रविदास जयंती के मौके पर करोल बाग के श्री गुरु रविदास विश्राम धाम मंदिर में पूजा की। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी और पार्टी की महासचिव प्रियंका गांधी आज वाराणसी में संत रविदास मंदिर जाएंगे। राहुल और प्रियंका बुधवार सुबह सीर गोवर्धनपुर में मत्था टेकेंगे। बता दें कि संत रविदास जी का जन्म माघ पूर्णिमा के दिन वाराणसी के पास सीर गोबर्धनगांव में हुआ था। संत रविदास 15वीं से 16वीं शताब्दी के दौरान भक्ति आंदोलन से जुड़े थे। उनके भजन गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल है।

वर्चुअल रैली में प्रियंका गांधी ने साधा भाजपा सरकार पर निशाना, कहा- राज्य का विकास सिर्फ कांग्रेस कर सकती है

नई दिल्ली। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने मणिपुर में वर्चुअल रैली को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने भाजपा सरकार पर जमकर हमला बोला। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने मणिपुर की जनता को संबोधित करते हुए कहा कि, भाजपा सरकार की नीतियों से 2-3 बड़े उद्योगपतियों को फायदा हो रहा है, जबकि गरीब और मध्यम वर्ग को उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है। प्रियंका गांधी वाड्रा ने राज्य के मुख्यमंत्री पर भी हमला बोला। उन्होंने कहा कि, आज जो राज्य के मुख्यमंत्री है वो आपकी आवाज नहीं सुन रहे हैं। अगर हमारी सरकार आएगी तो हम सिंचाई पर पूरा ध्यान देंगे। प्रियंका गांधी ने आगे कहा कि उनकी पार्टी राज्य का विकास चाहती है। मणिपुर में कांग्रेस ने वाम दलों, के साथ गठबंधन किया है। पिछले पांच साल में कांग्रेस के 16 विधायक पार्टी छोड़ चुके हैं। अफस्पा को खत्म करना मणिपुर में कांग्रेस का अहम चुनावी एजेंडा है। प्रियंका गांधी ने वर्चुअल रैली के दौरान जनता की समस्याओं को दूर करने का वादा भी किया। उन्होंने कहा, मणिपुर के लिए कांग्रेस सबसे अच्छी पसंद है। मणिपुर में अगर कांग्रेस सत्ता में आई तो लोगों की मांगों पर ध्यान देगी। उन्होंने कहा, मणिपुर में नौकरियां पैदा करने का समय आ गया है। हम मणिपुर रेजिमेंट बनाएंगे और स्थानीय स्तर पर परीक्षाएं आयोजित करेंगे। प्रियंका गांधी ने मणिपुर के लिए कांग्रेस के एजेंडे को जनता के सामने रखा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का फोकस विकास और महिला सशक्तिकरण के मुद्दे पर है। पिछले पांच वर्षों की राजनीति ने आपको चोट पहुंचाई है। कांग्रेस पार्टी और प्रगतिशील गठबंधन विकास के लिए पहल कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि, मणिपुरी समाज के सभी वर्गों की मुफ्त स्वास्थ्य सेवा, बेरोजगारी भत्ता और नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा करना पार्टी के एजेंडे में है। आपको बता दें कि चुनाव आयोग ने मणिपुर विधानसभा चुनाव की तारीखों में संशोधन किया है। पहले चरण का मतदान 27 फरवरी के बजाय 28 फरवरी को होगा। जबकि, दूसरे चरण का मतदान 3 मार्च की जगह 5 मार्च को होगा।

हैदराबाद में वेब सीरीज से प्रेरित एक अपहरण गिरोह को पुलिस ने किया गिरफ्तार

हैदराबाद। काल्पनिक घटनाओं पर आधारित बहुत सी फिल्में अजीबो-गरीब कहानियां दिखाती हैं। यह फिल्में लोगों के मनोरंजन के लिए दिखाई जाती है। वहीं बहुत से लोग सुपरहिट फिल्मों के डायलाग्स प्रभावित होकर अपनी वास्तविक जिंदगी में दोहराते हैं। तो कुछ लोग मौज-मस्ती के तौर पर अपने पसंदीदा फिल्मों के किरदारों की नकल करते है। लेकिन हैदराबाद से चौंकाने वाला मामला सामने आया है। जहां एक व्यक्ति ने वेब सीरीज से प्रेरित होकर अपना एक अपहरण गिरोह बना लिया था। जी हां व्यक्ति महिलाओं सहित अन्य लोगों को फिरौती के लिए, अपहरण करने के लिए भर्ती किया करता था, जिसे पुलिस ने गिरोह के अन्य सदस्यों के साथ हैदराबाद में गिरफ्तार कर लिया है। एक प्रेस कान्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, वेस्ट ज़ोन के डीसीपी डी जोएल डेविस ने कहा, 'आरोपी सुरेश एक आनलाइन नेटफ्लिक्स वेब सीरीज़ से प्रेरित हुआ, जिसमें इसका मुख्य पात्र लोगों को कई अपराध करने के लिए भर्ती करता था। इसी तरह, उसने एक योजना बनाई और एक की भर्ती की।' उन्होंने बताया कि आरोपी सुरेश ने कुछ लोगों के साथ, जिनमें महिलाएं भी शामिल है, उन्हें अपने गिरोह का हिस्सा बनाया और उनसे निर्दोष लोगों का अपहरण कर, उनके परिवार वालों को डरा धमकाकर आसानी से पैसा कमाने का तरीका बताया। आपको बता दें कि 6 फरवरी को एक महिला शिकायत कर बताया कि उसका छोटा बेटा लापता है और उसे रिहा करने के लिए अपहरणकर्ता ने फिरौती की मांग की है, जिस पर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मामला दर्ज किया और जांच शुरू का पुलिस ने कहा कि इस पूरे मामले का मुख्य आरोपी सुरेश अपने दोस्तों के सर्कल में लोगों का विश्वास हासिल करने के लिए सोशल मैसेजिंग ऐप के जरिए वायस मैसेज, टेक्स्ट मैसेज भेजकर किराए की महिलाओं की मदद से उन्हें भी प्रेरित किया। पुलिस ने कहा कि पीडित महिलाओं को बहला-फुसलाकर फंसाया जाता था, इसलिए वे कभी शिकायत नहीं करती थी।

मशहूर संगीतकार बप्पी लहरी के निधन पर गृह मंत्री अमित शाह समेत अन्य नेताओं ने जताया दुख

नई दिल्ली। एक बार फिर देश की संगीत दुनिया सुनी हो गई है। स्वर कोकिला लता मंगेशकर के जाने के बाद, बालिवुड के मशहूर गायक और म्यूजिक कंपोजर बप्पी लहिरी का निधन हो गया है। बता दें कि वह 69 वर्ष के थे। उन्होंने अपनी आखिरी सांसें मुंबई के अस्पताल में ली। बप्पी दा ने 80 90 के दशक के ढेरों गाने गाए हैं और आज भी उनके कई गानों पर लोगों के पैर थिरकने लगते है। उनके निधन से हर कोई शोक में है। वहीं देश के गृह मंत्री अमित शाह समेत अन्य नेताओं ने अपना दुख व्यक्त किया है। मशहूर संगीतकार बप्पी लहरी के निधन पर गृह मंत्री अमित शाह ने अपना दुख व्यक्त किया उन्होंने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल से ट्वीट कर कहा, 'महान गायक और संगीतकार बप्पी लाहिड़ी जी के निधन के बारे में जानकर दुख हुआ। उनके निधन से भारतीय संगीत की दुनिया में एक बड़ा खालीपन आ गया है। बप्पी दा को उनके बहुमुखी गायन और जीवंत स्वभाव के लिए याद किया जाएगा। उनके परिवार और प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएं।रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ट्वीट कर कहा, 'सुप्रसिद्ध संगीतकार बप्पी लहरी के निधन से अत्यंत दुख हुआ है। उन्होंने अनेक गीतों को अपने धुनों से सजाया। वे संगीत की बारीक और गहरी समझ रखते थे। बप्पीदा सामाजिक सरोकारों के प्रति भी हमेशा जागरूक रहे। दुःख की इस घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके परिवार और प्रशंसकों के साथ है।

भारत में बीते 24 घंटे में सामने आए कोविड 19 के 30,615 नए मामले, 514 लोगों की मौत

नई दिल्ली। देश में बीते 24 घंटों में कोविड-19 के 30,615 नए मामले सामने आए हैं। जानकारी के अनुसार, 24 घंटे में कोरोना संक्रमण से 514 लोगों की मौत हुई है। वहीं, 82,988 लोग कोरोना से ठीक हुए हैं। देश में कोरोना वायरस के अब तक 4,27,23,558 मामले मिले हैं, जबकि, सक्रिय मामले की संख्या 3,70,240 है। एएनआइ के मुताबिक, भारत में पिछले 24 घंटों में कोविड-19 के 30,615 नए मामले आए, 82,988 रिकवरी हुई और 514 लोगों की कोरोना से मौत हुई। आपको बता दें कि, देश में अबतक 1,73,86,81,675 लोगों को वैक्सीन लग चुकी है। यहीं नहीं, कोरोना से ठीक होने वाले संक्रमितों की संख्या 4,18,43,446 है। इसके अलावा कोरोना से 5,09,872 लोगों की मौत हो गई है इससे पहले, मंगलवार को देश में कोरोना के 27,409 नए मामले सामने आए थे। इस दौरान 82,817 लोग कोरोना से ठीक हुए, जबकि 347 लोगों की मौत हो गई थी। वहीं, सोमवार को देश में कोरोना के 34,113 नए मामले दर्ज किए गए थे। रविवार को 44,877 मामले सामने आए थे। सोमवार को कोरोना से 346 लोगों की मौत हुई थी, जबकि रविवार को संक्रमण से 684 लोगों की जान गई थी। तीसरी लहर में कोरोना के मामलों और मौतों की संख्या में लगातार गिरावट देखने को मिल रही है।

बंगाल में आज से खुल रहे हैं स्कूल, कोविड प्रोटोकाल के अनुसार हो चुकी तैयारी

कोलकाता। कोविड-19 महामारी को कम होता देख देश के अधिकांश राज्यों की तरह बंगाल, राजस्थान व तमिलनाडु में बुधवार से सभी प्राइमरी व अपर प्राइमरी स्कूलों को खोला जा रहा है। इसके मद्देनजर बंगाल में राज्य सरकार के अंतर्गत आने वाले सभी स्कूलों को एक दिन पहले ही कोरोना प्रोटोकाल के तहत तैयार कर लिया गया है। बता दें कि दिल्ली, उत्तर प्रदेश, ओडिशा में भी इसी सप्ताह सोमवार , 14 फरवरी से प्राइमरी कक्षाओं में आफलाइन पढ़ाई की शुरुआत कर दी गई है। कोलकाता के एंड्रयूज हाई स्कूल के प्रिंसिपल सुप्रिया मित्रा ने कहा, 'हमने कक्षाओं को सैनिटाइज कर लिया है और स्कूल के प्रांगण में कोविड प्रोटोकाल के पालन को सुनिश्चित करेंगे।' संक्रमण को दूर रखने के लिए कक्षा खत्म होने के बाद हर रोज स्कूल को सैनिटाइज किए जाने की व्यवस्था की गई है। स्कूल के प्रिंसिपल ने आगे कहा, 'हम स्कूल आने वाले प्रत्येक बच्चे के शरीर का तापमान थर्मल गन के जरिए लेंगे। हैंड सैनिटाइजर्स का इस्तेमाल किया जाएगा। शारीरिक दूरी का सुनिश्चित करने के लिए कक्षा के एक सेक्शन को दो या तीन हिस्से में विभाजित कर दिया गया है। उदाहरण के लिए कक्षा पांच के दो सेक्शन- ए और बी हैं। दोनों ही सेक्शन को दो समूहों में बांट दिया जाएगा। विद्यार्थियों को भी इस बाबत कई निर्देश जारी कर दिए गए हैं। उन्हें अपना लंच बाक्स , वाटर बोतल, चम्मच व अन्य सामान लाने की हिदायत दी गई है ।

देश में ड्रग्स जब्ती में बेतहाशा वृद्धि, तस्करी के सबसे पसंदीदा जरिया बने डार्कनेट और समुद्री रास्ते

नई दिल्ली। देश में पिछले पांच वर्ष के दौरान ड्रग्स की जब्ती में बेतहाशा वृद्धि हुई है। साथ ही देश में ड्रग्स तस्करी के लिए डार्कनेट और समुद्री रास्ते सबसे ज्यादा पसंदीदा जरिया बनकर उभरे हैं। इस बारे में एनसीबी के महानिदेशक (डीजी) एसएन प्रधान ने मंगलवार को बताया कि प्रभावी प्रवर्तन गतिविधि से हाल के वर्षो में ड्रग्स की जब्ती में वृद्धि हुई है। उन्होंने एएनआइ से बातचीत में कहा, 'भारत में बड़े पैमाने पर ड्रग्स की तस्करी होने लगी है। ड्रग्स समुद्र, लैंड और बॉर्डर के रास्ते आ रहा है, डार्कनेट, पार्सल कूरियर और क्रिप्टोकरेंसी के जरिए भी तस्करी हो रही है इसलिए इसके तह तक जाने के लिए डार्कथान और हैकथान का इंतजाम किया गया है। नाकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) के डीजी ने कहा 'पिछले पांच साल में देश हेरोइन जब्ती में अप्रत्याशित वृद्धि का गवाह बना। 2017 में 2,146 किलो से शुरू हुई हेरोइन की जब्ती 2021 में 7,282 किलो पर पहुंच गई। यह लगभग 300 प्रतिशत वृद्धि दर्शाती है। इसी तरह अफीम की जब्ती में 172 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2017 में 2,551 किलोग्राम अफीम जब्त की गई थी जो 2021 तक 4,386 किलोग्राम तक पहुंच गई। इस अवधि में गांजा जब्ती में भी 191 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2017 में 3,52,539 किलो गांजा जब्त किया गया था जो 2021 में बढ़कर 6,75,631 किलोग्राम हो गया। प्रधान ने 'डार्कथान 2022' नामक हैकथान का उद्घाटन करते हुए जब्ती के ये आंकड़े बताए। हैकथान का उद्देश्य डार्कनेट के माध्यम से मादक पदार्थो की होने वाली तस्करी का समाधान तलाशना है। डार्कनेट गुप्त इंटरनेट प्लेटफार्म को कहा जाता है।

रूस के साथ सीमा विवाद के बीच भारत के साथ उड़ानों की संख्या बढ़ाएगा यूक्रेन

नई दिल्ली। रूस के साथ चल रहे सीमा तनाव के बीच यूक्रेन, भारत के साथ फ्लाइटों की संख्या बढ़ाने की तैयारी में है। सूत्रों ने बताया कि दोनों देशों के नागरिक उड्डयन अधिकारियों और विभिन्न एयरलाइनों के बीच इस बात को लेकर चर्चा चल रही है कि उड़ानों की संख्या कैसे बढ़ाई जाए। भारतीय नागरिकों और भारत में उनके परिवारों के सवालों का जवाब देने के लिए दूतावास के साथ-साथ विदेश मंत्रालय में नियंत्रण कक्ष भी स्थापित किया गया है। वहीं, यूक्रेन के भारतीय दूतावास में भी 24 घंटे की हेल्पलाइन भी स्थापित की गई है। इससे पहले, यूक्रेन में भारतीय दूतावास ने अपने नागरिकों, विशेष रूप से ऐसे छात्रों को अस्थायी रूप से कीव छोड़ने के लिए कहा है, जिनका प्रवास आवश्यक नहीं है।

लहर नही ललकार होगी फिर एक बार भाजपा सरकार होगी

(आधुनिक समाचार सेवा).
अनुराग केसरवानी

प्रयागराज। आज भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा मुठ्ठीगंज मण्डल दरियाबाद भाग2 स्थित डॉ पाण्डेय चौराहा पर प्रयागराज शहर दक्षिणी से भाजपा प्रत्याशी व उत्तर प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री मा. नंद गोपाल गुप्ता नंदी जी के पक्ष में मतदान हेतु भाजपा युवा मोर्चा प्रयागराज महानगर अध्यक्ष बड़े पप्पू पाण्डेय (रोहित) जी के नेतृत्व मे जनसम्पर्क सम्पन्न हुआ जिसमे महानगर से सौरभ मेहता जी व तन्मय उपाध्याय जी व मुठ्ठीगंज मण्डल युवा मोर्चा के अध्यक्ष लवकुश केसरवानी जी महामंत्री केशव प्रसाद शर्मा, उपाध्यक्ष दीपक शर्मा, मंत्री सचिन गुप्ता, ईशान पाठक, अभिषेक जायसवाल, सुजल सुदर्शन मीडिया प्रभारी अनुज श्रीवास्तव , सेक्टर संयोजक अमित जायसवाल व मयंक त्रिपाठी के साथ अन्य कार्यकर्तागण उपस्थित रहे

जमुना पार ब्यूरो चीफ के घर पहुंचे नागरिक उड्डयन मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नदीं

(आधुनिक समाचार सेवा)
श्री नाथ

प्रयागराज। चुनावी माहौल में यूं तो नेताओं का तांता हर क्षेत्र में लगा ही रहता है पर जमुनापार की माने तो भाजपा के प्रयागराज शहर दक्षिणी प्रत्याशी नंद गोपाल गुप्ता नदीं लोगो के हर सुख दुख में खड़े हमेशा मिलते है। ऐसे ही कहें तो जनसंपर्क के तहत जैसे ही नागरिक उड्डयन मंत्री नंदी जमुना पार आधुनिक समाचार ब्यूरो चीफ श्रीकांत शाह की बेटी के जन्मदिन पर उनके घर पहुंचे , वहां उन्होंने ब्यूरो चीफ की बेटी से आशीर्वाद लिया और आधुनिक समाचार के बहुमुखी प्रतिभाशाली टीम की तारीफ की। इस मौके पर आधुनिक समाचार रेडियो हेड सुधांशु शर्मा भी मौजूद रहे।

रिकार्ड मतों से जीतेंगे मुज्तबा सिद्दीकी - नसीरुद्दीन राईन

प्रयागराज। 256 विधानसभा फूलपुर से समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार हाजी मुज्तबा सिद्दीकी के समर्थन में सपा नेता अतीकुर्रहमान सिद्दीकी एडवोकेट के नेतृत्व में नगर पंचायत फूलपुर जमीलाबाद,अंजही,भरईटोला, दुनियागंज, अंसार नगर, इस्माईल गंज में डोर टू डोर जनसंपर्क किया और समाजवादी पार्टी की पक्ष में मतदान की अपील किये और सरकार में हुए विकास कार्यों को जन जन तक पहुंचाने के लिए सैकड़ों सपाई मौजूद रहे इस दौरान सपा जिला उपाध्यक्ष नसीरुद्दीन राईन ने कहा कि अखिलेश यादव जो अपने घोषणा पत्र में जो कहा उसे पुरा किया था 2022 में सरकार बनी तो प्रत्येक घर में तीन सौ युनिट बिजली मुफ्त किसानों को सिंचाई मुफ्त नौजवानों छात्रों को लैपटॉप मुफ्त केजी से पीजी तक पढ़ाई मुफ्त दबाई मुफ्त पुरानी पेंशन बहाल जैसे बाईस में बाईस योजनाये गरीबों किसानों नौजवानों छात्रों महिलाओं व्यापारियों की हित के लिए संकल्पित है प्रदेश की जनता बीजेपी सरकार ऊब चुकी है बस सत्ताइस फ़रवरी का इंतेज़ार है जुमले वाली सरकार से बाय बाय करने के लिए विकास पुरुष अखिलेश यादव की फुल बहुमत की सरकार बनाने जा रही है क्षेत्र वासियों से 27 फरवरी को साइकिल निसान पर बटन दबाकर हाजी मुज्तबा सिद्दीकी को विजयी बनाने की अपील किया ।इस दौरान। मोईद अंसारी, सुहेल सिद्दीकी, अखिलेश यादव,यहिया सिद्दीकी अरकान सिद्दीकी, फिरोज राईन, सौरभ यादव, शमशाद खान, सोनू पांडेय,उवैद सिद्दीकी,संजय यादव, सभाजीत पाल, मुराद मंसूरी,मो इरफान, रवीन्द्र पाल,एरतेजा सिद्दीकी,आदि लोग मौजूद रहे।

पावर प्लाट सीमेंट फैक्ट्री के सामने लगता है भीषण जाम

(आधुनिक समाचार सेवा)
राकेश मिश्रा

प्रयागराज। शंकरगढ़ राम भवन चौराहे पर लगा भीषण जाम, जाम का कारण पावर प्लांट में आने जाने वाली सीमेंट की क्लिंकर व हाइवा गाडियां जोकि दिन रात चलती रहती हैं प्रदूषण जोरों पर फैला है बाइक सवार होते हैं धूमिल शासन प्रशासन है मौन जिनका कोई नियम कानून नहीं है जिससे आम जनमानस व स्कूली बच्चों को काफी दिक्कत होती है शासन प्रशासन से यह अनुरोध है कि इन गाडियों का एक निश्चित रूट व एक निश्चित समय निर्धारित कर दिया जाए ताकि यह समस्या और जटिल रूप ना ले सके अथवा कोई बड़ी घटना दुर्घटना ना हो प्राप्त जानकारी के अनुसार इन बड़ी गाडियों को हाईवे से होकर जाना चाहिए परंतु यह गाडियां हाईवे का टोल बचाने के कारण शंकरगढ़ से नारीबारी लिंक रोड का रास्ता अपनाते है जिससे उमापुर टोल टैक्स व गन्ने टोल टैक्स की चोरी करते हुए सरकार के राजस्व को चूना लगाते हैं।

पोर्ट बिलिटी के तहत कोटेदार नहीं देता तेल, नमक, चना

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। खाद्य विभाग द्वारा राशन कार्ड धारकों को वर्तमान सरकार द्वारा पोर्ट बिलिटी सुविधा के तहत यदि कोई व्यक्ति अपने निवास से गैर जनपद या प्रांत जाता है। तो वहां भी फिंगर द्वारा खाद्य विभाग द्वारा दी गई सामग्री प्राप्त करने का अधिकार है। परंतु फूलपुर के सरायदाऊद उर्फ ढकपूरा का कोटेदार मात्र राशन ही देता है। तेल, नमक, चना नहीं देता। उक्त आरोप मैलहन गांव के वहीद पुत्र मजीद ने लगाते हुए मामला आपूर्ति निरीक्षक के संज्ञान में लेने की बात कही।

प्रधान ने पत्नी व बेटे के नाम खारिज किया शौचालय का धन, गाँव वालों को ठेंगा

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सि

प्रतापगढ़। विकास खंड लालगंज के बासूपुर-मिश्रपुर ग्राम के प्रधान अशोक कुमार गुप्ता ने शासन के धन की जिस तरह से लूट मचा रखी है गाँव वाले परेशान हैं। इस प्रधान ने न केवल शासन के धन को अपने और अपने परिवार की जागीर ली है बल्कि गाँव वालों को शासन की योजनाओं से वंचित वह कर रहा है।यही कारण है कि गाँव वालों में आक्रोश दिखाई पड़ रहा है।इस ग्राम प्रधान ने अपनी पतने उमा गुप्ता और अपने बेटे दीपक गुप्ता के नाम पर शौचालय का धन आहरित कर लिया है।हाँ पात्र लोगों को शौचालय का धन उसके द्वारा नहीं दिया जा रहा है। जिसको इसने शौचालय का लाभ दिया भी है वे अपात्र है।कुछ ऐसे लोगों को उसने शौचालय का धन दिया है जो 10 साल पहले ही शौचालय बनवा चुके हैं कुछ लोगों से दो 2000 इसने सुविधा शुल्क के नाम पर ले रखा है और उन्हें आज तक शौचालय के लाभांश धन को प्रदान नहीं किया है।जितेंद्र यादव का कहना है कि लगभग 2 महीने पहले प्रधान ने उससे 2000 सुविधा शुल्क माँगा।प्रधान ने कहा कि इसे बी0डी0ओ0को देना पड़ता है। उसने 2000 सुविधा शुल्क के नाम पर दे दिया लेकिन आज तक उसे शौचालय का लाभांश धन प्राप्त नहीं हुआ।जब वह कहता है कि उसका 2000 ही लौटा दो तो वह उसे धमकी देता है कि किसी से कहोगे तो ठीक नहीं होगा और मेरा कुछ कर भी नहीं पाओगे।ऐसे ही कई ग्रामीणों को धमका चुका है कि चाहे जितनी शिकायत करोगे उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाओगे। अपने आप को सांसद का करीबी बताते हुए वह गरीबों और कमजोरों को धमकाता रहता है और शासन की योजनाओं का लाभ उन लोगों को पहुँचा रहा है जो पहले से ही सुविधा संपन्न एवं धनी हैं।ग्राम प्रधान की कार्यशैली से ग्रामीण नाराज हैं।ग्रामीणों का कहना है कि कुछ लोगों का उसने शौचालय का लाभांश धन स्वयं हड़प लिया है और उन्हें शौचालय नहीं प्रदान किया गया है। प्रधान के इस मनमानेपन एवं लूट खसोट से इस ग्राम पंचायत के लोग परेशान हैं।शासन व प्रशासन के द्वारा कार्यवाही न होने से उसका मनोबल दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। इस ग्राम पंचायत का पंचायत भवन जर्जर स्थिति में है।इसके शौचालय में गेट तक नहीं है।छतों पर काई पड़ी हुई है लेकिन आज तक इस प्रधान ने न तो इसकी साफ सफाई करवाई न पुताई करवाई।न ही इसकी मरम्मत करवाई। न तो यहाँ ग्राम पंचायत अधिकारी बैठता है न ही यह ग्राम प्रधान इस पंचायत भवन में बैठता है जिससे ग्रामीणों को ग्राम प्रधान व ग्राम पंचायत अधिकारी को ढूँढना पड़ता है।फिरभी वे दोनों उन्हें नहीं मिलते हैं। ग्रामीणों ने जिलाधिकारी का ध्यान आकृष्ट कर ऐसे ग्राम प्रधान के विरुद्ध कार्यवाही करने की माँग की है।

गंगा स्नान करने गए बालक की डूब कर मौत

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। माघी पूर्णिमा पर्व पर परिजनों के संग गंगा सनन करने गाऐ एक किशोर की बुद्धवार की सुबह पानी मे डूबने से मौत हो गई।मौके पर पहुंची मेजा पुलिस ने स्थानीय गोताखोरों की मदद से शव पानी से बाहर निकालकर आवश्यक कार्यवाही पूरी की। मिली जानकारी के मुताबिक पियूष प्रजापति(12) पुत्र सोनू प्रजापति निवासी जेवनियां थाना मेजा अपने परिजनों के साथ रैपुरा गंगा घाट पर गंगा सनन करने गया था।जहाँ वह गहरे पानी मे समा गया।

प्रतापपुर विधानसभा गुलदस्ता स्वरूप है। घनश्याम पांडेय

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। बहुजन समाज पार्टी के 257 प्रतापपुर विधानसभा प्रत्याशी घनश्याम पांडेय ने बुधवार दोपहर मदरसा प्रांगण मैलहन में एक सभा में उपस्थित लोगों के बीच कहा। कि प्रतापपुर विधानसभा गुलदस्ता के माफिक है। जिसमें हर किस्म व रंग के फूल हुआ करते है। यहां जाति धर्म से हटकर लोग मतदान करते हैं। उन्होंने कहा। कि इस क्षेत्र का असली रिश्तेदार ब्राह्मण समाज का मैं हूं। मेरा रिश्ता यहां के ब्राह्मण समाज से जितना गहरा है। उतना हडिया या अन्य क्षेत्र से आने वाले ब्राह्मणों का नहीं है। पूर्व प्रमुख घनश्याम दुबे के आवास पर पहुंचकर अपनी निकटता का एहसास कराते हुए जनसभा में आमंत्रित किया। घनश्याम पांडेय ने कहा। कि जीतने के बाद सरकारी धन का लेखा जोखा विधानसभा के एक एक गांव के बीच बैठकर उजागर करुगा। मतदाताओं की इच्छानुसार विकास कार्यों की सूची बनाकर कार्य करुंगा। कार्यक्रम का संचालन राजमणि मिश्र ने किया। मौके पर सुधाकर उर्फ ननकऊ दुबे, राजू राजेपुरी, रामसुंदर उर्फ भगेलू, अ0 मजीद सदर, उमाकांत पांडेय, बनारसी, सगीर इरफान सादिक बाबा सईद खां आदि लोग मौजूद रहे।

जनसंपर्क के दौरान सपा प्रत्याशी ने गिनाया घोषणा पत्र के मुख्य बिंदु

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। 257 प्रतापपुर विधानसभा की सपा प्रत्याशी विजमा यादव ने गांव गांव दौरा करके पार्टी के घोषणापत्र के मुख्य बिंदुओं को आम लोगों के समक्ष रखा। जिसमें मुख्य रुप से सरकार बनने पर 300 यूनिट बिजली मुफ्त लघु सीमांत किसानों को डीएपी 2 बोरी, यूरिया 5 बोरी मुफ्त एवं बीपीएल परिवारों को दो एलपीजी सिलेंडर मुफ्त, सरकारी नौकरी में महिलाओं को 33 आरक्षण, बच्चियों की शिक्षा के जी से पीजी तक मुफ्त, समाजवादी पेंशन योजना पुनः शुरू किए जाने की बात, श्रमिक पेंशन 18000 सालाना,12वीं पास सभी छात्रों को मुफ्त लैपटॉप, पुरानी पेंशन योजना बहाल की जाएगी। जनसंपर्क के दौरान पी आर ओ जगदीश भाई, राकेश यादव, बबलू प्रधान, नंद लाल यादव, दिनेश यादव, कन्हैया लाल यादव, सचिन सोनी, राहुल यादव, मोहम्मद नसीम, आफताब आदि लोग मौजूद रहे।

सडक दुर्घटना में एक की मौत ,दुसरा ब्यक्ति गम्भीर रूप से घायल है-मेजा

(आधुनिक समाचार सेवा)
संजय द्विवेदी

प्रयागराज। मेजा थाना क्षेत्र के रामनगर दिघिया मार्ग पर औता गांव के समीप मंगलवार देर शाम सड़क दुर्घटना में बाइक सवार एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि दूसरा युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। राहगीरों ने दोनों को सड़क पर पड़ा देख पुलिस को सूचना दी। मृतक की पहचान गया सिंह 50 वर्ष पुत्र माता बख्श सिंह गांव निवासी सुमेरी का पूरा थाना मेजा जबकि घायल की पहचान विजय सिंह 40 वर्ष पुत्र साहब सिंह सोनवर्षा ऊंचडीह के रूप में हुई। घायल युवक को समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रामनगर ले जाया गया जहां युवक को चिकित्सकों ने जनपद इलाहाबाद के लिए रेफर कर दिया। पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं घटना कैसे घटित हुई या घायल के होश मे आने के बाद ही पता चल सकेगा।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** **28 फरवरी 2022**

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710,
9807278552, 9415608790

यूरिया की कालाबाजारी में दो दुकानदारों पर दर्ज होगा केस

गाजीपुर । प्रदेश के किसानों के लिए आवंटित यूरिया को कालाबाजारी कर बिहार भेजने वाले गहमर के दो दुकानदारों पर मुकदमा दर्ज कराया जाएगा। जिला कृषि अधिकारी मृत्युंजय सिंह ने पूरे मामले की रिपोर्ट तैयार कर डीएम मंगला प्रसाद सिंह को प्रेषित कर दी है। अब उनके आदेश की प्रतीक्षा की जा रही है। बिहार बार्डर पर स्थित उर्वरक की दुकानों से कालाबाजारी कर यूरिया को बिहार भेजने की सूचना काफी दिन से जिला प्रशासन को मिल रही थी। इधर गाजीपुर में यूरिया की किल्लत थी और उधर दुकानदार उसे बिहार भेजने में लगे हुए थे। डीएम के निर्देश पर जिला कृषि अधिकारी इसकी लगाकर निगरानी करा रहे थे। इसी दौरान रविवार को सूचना मिली कि गहमर स्थित दो दुकानों से बिहार से आए कथित 70-80 किसानों ने भारी मात्रा में यूरिया लिया है और उसे बिहार ले जाने के लिए गहमर रेलवे स्टेशन पर ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसके बाद आनन-फानन जिलाधिकारी अधिकारी मौके पर पहुंच गए और स्थानीय पुलिस, जीआरपी व आरपीएफ के साथ स्टेशन पर छापामारी कर दी। इस दौरान कथित किसान वहां से खिसक लिए। यूरिया को उठाकर गहमर थाना लाकर सीज कर दिया गया। जांच में चंदन खाद भंडार व श्वेता खाद भंडार का नाम आया। दोनों दुकानों का स्टाक मिलान करने के साथ उन्हें सील कर दिया गया। पूरी रिपोर्ट तैयार कर डीएम को प्रेषित की गई। बिहार भेजी जा रही यूरिया को लेकर की गई कार्रवाई की पूरी रिपोर्ट तैयार कर जिलाधिकारी को प्रेषित कर दी गई है। उनके आदेश के बाद संबंधित दोनों दुकानदारों पर मुकदमा दर्ज कराया जाएगा। - मृत्युंजय सिंह, जिला कृषि अधिकारी। स्थानीय जीआरपी ने शांति भंग के आरोप में बक्सर बिहार के मुसाफिर गंज निवासी राकेश कुमार राय को सेवराई के उप जिला मजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत कर न्यायिक अभिरक्षा में गाजीपुर जेल भेजा। जीआरपी चौकी प्रभारी राम प्रवेश सिंह ने बताया कि रविवार को गहमर स्टेशन पर अवैध रूप से खाद की तस्करी करने वाले लोगों को भड़काने व शांति व्यवस्था भंग करने पर राकेश राय को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया।

वाराणसी के राजेश ने रणवीरपुर सरयां के बेचन को दी पटखनी

जमानियां (गाजीपुर)। क्षेत्र के सोनहरिया के बाबा सिद्धनाथ मंदिर पर शुक्ल त्रयोदशी के मौके पर सोमवार को दंगल व मेला का आयोजन किया गया। दंगल प्रतियोगिता में क्षेत्र के दर्जन भर

पहलवानों ने भाग लेकर अपने अपने दाव पेंच आजमाए। पहली कुश्ती रणवीरपुर सरया के बेचन पहलवान और डीएलडब्लूयू वाराणसी के राजेश पहलवान के बीच हुई, जिसमें राजेश पहलवान ने बाजी मारी। अगली कुश्ती मिठ्ठा पारा के दीना पहलवान और बहादुर गंज के अंकित के बीच हुई। दीना पहलवान विजयी हुए। इसके बाद कदुहरा के सुनील पहलवान और इनवा के लोहा पहलवान में हुई, जिसमें लोहा पहलवान ने कला का प्रदर्शन दिखाते हुए सुनील को पटकनी दी। गाजीपुर कुश्ती संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष व राष्ट्रीय निर्णायक रामबदन राय ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में इस तरह के आयोजन से कुश्ती को बढ़ावा मिलेगा। बाबा सिद्धनाथ की कृपा से हम सब इस स्थान पर पहुंच कर परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में प्रतिभा की कमी नहीं है बस उसको निखारने की आवश्यकता है। कोई भी ग्रामीण क्षेत्र का पहलवान अगर हमसे सहयोग की आशा करता है तो मैं उसके लिए हर समय तैयार हूं। शास्त्रीय संगीत में द्वारिका नाथ राय, संतोष तिवारी, मकरध्वज उपाध्याय,कौशल उपाध्याय आदि ने भजन व लाली छाय रही है उड़त अबीर गुलाल प्रस्तुत कर लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया। मुख्य रूप से मंदिर के पुजारी पंडित विनोद तिवारी, मंदिर समिति के अध्यक्ष केदार नाथ तिवारी, संतराम, सुरेंद्र नाथ राय, केशव राय, आनंद राय, धनन्जय राय, तारकेश्वर राय, शशि आदि थे।

अस्पताल में तैनात होंगी तीन और महिला चिकित्सक

गाजीपुर । राजकीय मेडिकल कालेज से संबद्ध होने के बाद जिला महिला अस्पताल की स्वास्थ्य सुविधा पटरी पर लौटने लगी है। यहां तीन और महिला चिकित्सकों की तैनाती होने वाली है, जिससे प्रतिदिन ओपीडी और ओटी में महिलाओं को महिला चिकित्सक से उपचार और प्रसव कराने में आसानी होगी। जिला महिला अस्पताल काफी दिन से चिकित्सकों की कमी से जूझ रहा है। यहां चिकित्सकों के सृजित 15 में से आधे पद खाली हैं। वहीं स्टाफ नर्सो के भी आधे से अधिक पद रिक्त हैं। अब जो चिकित्सक व स्टाफ नर्स तैनात हैं, उन्हें ही 24 घंटे अस्पताल चलाना है। हालांकि अब मेडिकल कालेज से जुड़ने के बाद महिला अस्पताल की तस्वीर बदलने लगी है। दो महिला चिकित्सक डा. श्रुति मिश्रा और डा. खालिदा जिया उस्मानी सहित चार जेआर तैनात हैं। अब तीन और महिला चिकित्सकों को यहां तैनात करने की तैयारी चल रही है। इससे अब यहां पांच महिला चिकित्सक हो जाएंगी, जो प्रतिदिन बारी-बारी से ओपीडी और ओटी करेंगी। अब तक डा. श्रुति मिश्रा और डा. खालिदा जिया उस्मानी सप्ताह में दो-दो दिन ड्यूटी करती हैं, जिससे अन्य तीन दिन महिलाओं को पुरुष चिकित्सकों के भरोसे ही रहना पड़ता है। ऐसी बहुत ही महिलाएं हैं जो पुरुष चिकित्सकों से परामर्श लेने व फिजिकल उपचार कराने में परेशानी महसूस करती हैं, लेकिन अब उनकी समस्या दूर हो जाएगी। महिला अस्पताल में प्रतिदिन डेढ़ से दो सौ ओपीडी पर्चे कटते हैं। इसके अलावा आठ से 10 सामान्य प्रसव और दो से तीन महिला अस्पताल में तीन और महिला चिकित्सक तैनात की जाएंगी। इससे वहां चिकित्सकों की कमी काफी हद तक दूर हो जाएगी। शीघ्र ही यहां रात को भी आपरेशन से प्रसव की सुविधा मिलने लगेगी। इसकी तैयारी चल रही है।

वाराणसी के पराग डेयरी में बनेगा बाबा विश्वनाथ का प्रसाद, अन्य देवालयों से भी होगा अनुबंध

वाराणसी। बाबा श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के लिए प्रसाद अब

पराग डेयरी में बनेगा। इसमें श्रद्धालुओं को पेड़ा के साथ मेवा के लड्डू का भी स्वाद मिल पाएगा। वर्षों बाद डेयरी में एक बार फिर इसका उत्पादन शुरू किया जाएगा। प्रसाद के रूप में लड्डू-पेड़ा की बिक्री के लिए डेयरी प्रशासन ने श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के मुख्य कार्यपालक को पत्र लिखा है। दोनों पक्षों के बीच जल्द बैठक होने जा रही है। चुनाव बाद इस पर मुहर लगने की संभावना है। संकटमोचन, कालभैरव, दुर्गाकुंड, बड़ागणेश, महामृत्युंजय महादेव, मार्कंडेय महादेव समेत अन्य बड़े मंदिरों में भी प्रसाद बिक्री के लिए लिखा-पढ़ी की गई है। दो साल पहले भी पराग डेयरी के पास पेड़ों की बिक्री के लिए विश्वनाथ मंदिर परिसर में दो स्टाल थे। बाद में इन्हें निजी वेंडर को दे दिया गया। डेयरी संचालन की जिम्मेदारी नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड को मिलने के बाद नए सिरे से प्रयास शुरू किया गया है। संचालन बदलने के बाद तीन माह में पराग में दूध की प्रतिदिन आवक चार हजार लीटर से बढ़ कर 18,500 लीटर हो गई है। 10,500 लीटर बाजार में बिक्री व दो हजार लीटर खाद्य उत्पाद में खपाने के बाद भी छह हजार लीटर बच जाते हैं। पाउडर बना कर इसे कानपुर भेजा जाता है। अभी डेयरी में बन रहे पेड़ा की खपत लगभग 25 किलोग्राम प्रतिदिन है। विश्वनाथ मंदिर में आम दिनों में 10 हजार से 50 हजार तक श्रद्धालु आते हैं। पर्वों पर संख्या दो लाख से ऊपर होती है। विस्तारीकरण के बाद इसमें और भी वृद्धि हुई है। इसके अलावा कुल मंदिरों में भी नित्य औसतन एक से दो लाख श्रद्धालु आते हैं। डेयरी में लड्डू-पेड़ा का पैकेट सौ ग्राम से लेकर पांच सौ ग्राम तक का बनेगा। छह पीस वाले 100 ग्राम पेड़ा की कीमत 35 रुपये तो लड्डू की 30 रुपये होगी। 500 ग्राम पेड़ा 175 व लड्डू 150 रुपये का होगा। मांग होने पर इसे एक किलोग्राम का भी बनाया जाएगा। डेयरी में जौनपुर से 5500 लीटर, चंदौली से 3500 लीटर, वाराणसी से तीन हजार लीटर, भदोही से 2500, मीरजापुर व गाजीपुर से दो-दो हजार लीटर दूध रोज आता है। इन जिलों की 250 दुग्ध उत्पादक समितियों के जरिए पांच हजार पशु पालक जुड़े हैं।

भाजपा, सपा व बसपा सहित कुल 31 उम्मीदवारों ने किया नामांकन

आजमगढ़। जिला निर्वाचन अधिकारी अमृत त्रिपाठी ने बताया कि विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 के लिए सोमवार को भाजपा, सपा, बसपा व क्षेत्रीय पार्टियों व निर्दलीय सहित 31 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया। इसी के साथ जिले की चुनावी सरगर्मी

और बढ़ गई है। इस दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। उधर, नामांकन स्थल कलेक्ट्रेट व तहसील सदर के बाहरी क्षेत्रों में अपराह्न तीन बजे तक जाम की स्थिति बनी रही।343-अतरौलिया विधानसभा -कांग्रेस से रमेश चंद्र, सवीदय भारत पार्टी से जयप्रकाश मिश्र, राम देवी निर्दलीय, यदुनाथ यादव निर्दलीय, राष्ट्रवादी विकास पार्टी से ज्ञानमती मौर्या। निर्बल इंडिय शोषित हमारा आम दल (निषाद पार्टी) से प्रशांत कुमार सिंह, समाजवादी पार्टी से डॉ0 संग्राम पुत्र बलराम, **344-गोपालपुर विधानसभा क्षेत्र** -मित्रसेन यादव निर्दलीय, एआइएमआईएम से अब्दुल्ला, असंख्य समाज पार्टी से अनिरूद्ध राम पासी, बसपा से रमेश चंद्र यादव, आम आदमी पार्टी से सुनील कुमार यादव, बहुजन मुक्ति पार्टी से मनोज कुमार, मौलिक अधिकार पार्टी से रवींद्र नाथ शर्मा, कांग्रेस से मुन्नु मौर्य, विकासशील इंसान पार्टी से श्रीकांत यादव, अरुण राजभर निर्दलीय, राष्ट्रवादी विकास पार्टी से चंद्रभान, भाजपा से सत्येंद्र राय, सपा से नफीस अहमद। **345-सगड़ी विधानसभा क्षेत्र** -आम जनता इंडिया से वीरेंद्र यादव, समाजवादी पार्टी से अभय नरायन, समाजवादी पार्टी से जयराम सिंह, भाजपा से बंदना सिंह पत्नी सर्वेश सिंह, बहुजन मुक्ति पार्टी से अभिमन्यु समाजवादी पार्टी से भूपेंद्र कुमार, बंदना सिंह निर्दलीय, आल इंडिया मजलिस इत्तेहादुल मुसलेमीन से नेसार, एआइएमआईएम से अर्जुन कुमार, राष्ट्रीय जनतांत्रिक भारत विकास पार्टी से इशराक शब्बीर। **346-मुबारकपुर विधानसभा क्षेत्र** भारतीय सबका दल से मोहम्मद शमीम, भाजपा से अरविद कुमार जायसवाल, कांग्रेस से परवनी बानो, सपा से अखिलेश यादव, शाह आलम निर्दलीय, कन्हैया कुमार निर्दलीय, राष्ट्रवादी विकास पार्टी से मनोज कुमार अस्थाना, आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) से सोनू कुमार, लालबिहारी 'मृतक' निर्दलीय। **347-आजमगढ़ विधानसभा क्षेत्र** -समाजवादी पार्टी से पूर्व मंत्री दुर्गा प्रसाद यादव, भाजपा से अखिलेश कुमार मिश्र गुड्डू, बसपा से सुशील कुमार सिंह, इंडियन नेशनल लीग से परवेस आलम, शिव सेना से निखिल मिश्रा, बहुजन मुक्ति पार्टी से एहसान अहमद, राष्ट्रवादी विकास पार्टी से बृजेश कुमार यादव, भारतीय जन कल्याण पार्टी से रामविलास साहू, राजीव कुमार सिंह निर्दलीय। **348-निजामाबाद विधानसभा क्षेत्र** -बसपा से पीयूष कुमार सिंह, सुमन यादव निर्दलीय, एमआइएमआईएम से अब्दुर्रहमान, पूरनमासी राम प्रजापति निर्दलीय, राष्ट्रीय जनतांत्रिक भारत विकास पार्टी से शाह कमर, सीपीआइ से जितेंद्र हरि पांडेय, शशिकांत पांडेय निर्दलीय,भाजपा से मनोज कुमार यादव, बहुजन क्रांति पार्टी मर्क्सवाद आंबेडकरवाद से मो. अरशद आजमी, कांग्रेस से अनिल कुमार यादव, समाजवादी पार्टी से आलमबदी शामिल है।

349-फूलपुर-पवई विधानसभा क्षेत्र -जन अधिकार पार्टी से दिवाकर मौर्य, जितेंद्र कुमार निर्दलीय, आजाद समाज पार्टी से अमित कुमार, बसपा से शकील अहमद,संजय पुत्र सूर्यराज निर्दलीय। **350-दीदारगंज विधानसभा क्षेत्र** -पीपुल्स पार्टी आफ इंडिया से महेंद्र प्रसाद बिद, भाजपा से डा. कृष्ण मुरारी विश्वकर्मा, सपा से कमलाकांत राजभर, बसपा से भूपेंद्र सिंह, रामसेवक निर्दलीय। **351-लालगंज विधानसभा क्षेत्र**-जन अधिकार पार्टी से रिपुसूदन, सपा से बेचई सरोज, आजाद समाज पार्टी से राजनाथ जैसवार, भाजपा से नीलम सोनकर, बसपा से आजाद अरिमर्दन, रामचंदर निर्दलीय **352 मेंहनगर विधानसभा क्षेत्र** भारतीय जनता पार्टी से मंजू सरोज पतने विजय कुमार सरोज ने नामांकन पत्र दाखिल किया।

निर्वाचन आयोग की ओर से तय गाइडलाइन के तहत काम पूरे, बूथ पर मतदाताओं को मिलेगी सुविधा

वाराणसी। निर्वाचन आयोग के निर्देश तहत विधानसभा चुनाव में इस बार प्रत्येक बूथ पर एएमएफ

(एश योर्ड आफ मिनिमम फैसिलिटी) की सुविधा उपलब्ध कराने का निर्देश है। आरओ की ओर से रिपोर्ट दी जा चुकी है। आरओ की ओर दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि सभी बूथ पर शौचालय, पेयजल की मुक्कमल व्यवस्था, हेल्प डेस्क, दिव्यांजन के लिए रैंप, बुजुर्ग वोटरों की मदद के लिए वालिंटियर आदि की व्यवस्था रहेगी। यह व्यवस्था सुनिश्चित करा ली गई है निर्वाचन आयोग के गाइडलाइन तहत एएमएफ की व्यवस्था को यहां समस्त बूथ पर निर्धारित करने के लिए जिला निर्वाचन अधिकारी कौशल राज शर्मा की ओर से पहले ही निर्देश दिए जा चुके है । बकायदा इसकी जिम्मेदारी विधानसभावार तैनात आरओ को दी गई थी। सभी को निर्देशित किया गया था कि बूथो का सत्यापन कर लें। आयोग की ओर से निर्धारित सभी मूलभूत सुविधा सुनिश्चित कराएं। यह सुविधाए न रहने पर काईवाई भी होगी। राजस्व व पंचायत विभाग को बूथों को ठीक कराने की दी गई थी जिम्मेदारी जिले में अधिकतर बूथ पंचायत भवन, स्कूल, कालेज में है। इसलिए एएमएफ की सुविधा स्कूल प्रबंधन के साथ हीजिला पंचायत राज अधिकारी व राजस्व विभाग के लेखपाल को सौंपी गई। साथ ही यह भी निर्देशित किया गया है कि समय से पेयजल, शौचालय, रैप व बाउंड्री की व्यवस्था करा लें। यह सुविधाएं नहीं होगी तो सीधे तौर पर जिम्मेदारी तय कर लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धाराओं के तहत कार्रवाई होगी। प्रेक्षक भी करेंगे मौका मुआयना : निर्वाचन आयोग ने विधानसभावार सामान्य प्रेक्षक की तैनाती कर दी है। कुछ प्रेक्षक आ गए हैं। कुछ आने वाले हैं। बताया जा रहा है कि एक बार प्रेक्षक भी कुछ बूथों का सत्यापन कर सकते हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी की ओर से सभी आरओ को निर्देशित किया गया है कि तत्काल एक बार पुनः बूथों का सत्यापन कर लें, कमियां हो तो तत्काल ठीक करा लें।

रेड क्रास ने हाइजीन किट का किया वितरण

बलिया । नेहरू युवा केंद्र एवं रेड क्रास के संयुक्त तत्वावधान में

मंगलवार को मतदाता जागरूकता के अंतर्गत जिला युवा सम्मेलन और हाइजीन किट वितरण का आयोजन कार्यालय प्रांगण में हुआ। मुख्य अतिथि सीएमओ डा. नीरज कुमार पांडेय ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम न केवल युवाओं को मंच प्रदान करते हैं बल्कि उनका बौद्धिक विकास भी करते हैं। जिला युवा अधिकारी अतुल शर्मा ने युवती मंडल के सदस्यों को हाइजीन किट उपलब्ध करवाने पर रेड क्रास को धन्यवाद दिया। एसीएमओ डा. आनंद कुमार, शैलेंद्र पांडेय, शशिकांत ओझा, रविशंकर तिवारी, नवीन सिंह, सलभ उपाध्याय, उषा कुमारी, गुप्तेश्वर प्रसाद आदि उपस्थित रहे।

दोहरीकरण कार्य दो वर्षो से ठप, परेशानी

बैरिया (बलिया) । पिछले दो वर्षों से छपरा-औड़िहार रेलखंड पर रेवती से माझी रेल पुल तक रेलवे लाइन के दोहरीकरण का कार्य ठप है। वहीं सुरेमनपुर में प्लेटफार्म नंबर

दो का निर्माण कार्य भी दो वर्षो से आधा-अधूरा पड़ा हुआ है। स्थिति यही रही तो 2022 के अप्रैल तक इस मार्ग के दोहरीकरण का कार्य पूरा नहीं हो पाएगा। दोहरीकरण कार्य क्यों ठप पड़ा है यह बताने वाला कोई भी जिम्मेदार व्यक्ति नहीं है। न तो मौके पर ठीकेदार, उनके मुंशी मैनेजर और ना ही रेलवे के कोई कर्मचारी अधिकारी ही इस बाबत कुछ कहने को तैयार हैं। रेवती से सुरेमनपुर तक दूसरी रेलवे लाइन के लिए मिट्टी भरने का काम भी पूरा नहीं हो पाया है जबकि सुरेमनपुर से बकुल्हां तक एक वर्ष पूर्व दूसरी लाइन बिछा दी गई है लेकिन उसमें नट बोल्ट नहीं कसे गए हैं। इसी तरह बकुल्हां रेलवे स्टेशन से माझी रेलवे पुल तक दूसरी लाइन के लिए मिट्टी भरने का काम आधा अधूरा पड़ा हुआ है। साथ ही बकुल्हां सुरेमनपुर तथा रेवती स्टेशन पर भी दोहरीकरण से संबंधित कई कार्य अधूरे हैं। रेलवे ने घोषणा की थी कि अप्रैल 2022 से छपरा औड़िहार रेलखंड पर दोहरीकरण का कार्य पूरा हो जाएगा। वहीं स्थिति को देखने से लगता है कि अभी एक वर्ष से अधिक समय दोहरीकरण कार्य में लगेगा।

बलिया की उभांव पुलिस ने चाकूबांज एक और आरोपी को किया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल निर्भीक

बलिया। जिले के उभांव थाना की नरही गांव में हुई चाकूबाजी के

एक और आरोपित अमित उर्फ प्रहलाद राजभर ग्राम समसुद्दीनपुर निवासी को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया इस दौरान उभांव इंस्पेक्टर अविनाश कुमार सिंह ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने डंबर बाबा परती के पास से जानलेवा हमले के अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। अमित अपने ननिहाल ग्राम नरही में ही रहता था और घटना के बाद से फरार था। पुलिस ने उसके पास से एक अवैध चाकू भी बरामद किया है। संबंधित धाराओं में निरुद्धकर उसे न्यायालय के सुपुर्द कर दिया गया। गिरफ्तार करने वालों में एसआई राजेश कुमार, हेड कांस्टेबल कन्हैया यादव व महेंद्र यादव शामिल थे। 11 फरवरी की शाम नरही गांव में मारपीट और चाकूबाजी के मामले में पुलिस ने 13 फरवरी को दो आरोपितों सोनू राजभर और अंकित राजभर उर्फ मोनू को गिरफ्तार किया था

पूर्वांचल के प्रख्यात आध्यात्मिक संत सूफ़ी मोहिउद्दीन चिश्ती का 24वां सालाना उर्स पशुहारी मे 24 फरवरी को

(आधुनिक समाचार सेवा)
धीरेन्द्र संवाददाता

बिल्थरारोड(बलिया)। 'सूफी दरबार,सखी दरबार' के नाम से मशहूर पशुहारी स्थित पूर्वांचल के प्राख्यात आध्यात्मिक संत हजरत सूफी मोहिउद्दीन चिश्त रहमानी रहमतुल्लाह अलैहे का 24वां सालाना उर्स मुबारक 24 फरवरी दिन गुरूवार को संपन्न होगा। जिसमें बलिया के अलावा गाजीपुर, देवरिया, मऊ और आजमगढ़ आदि जिले सहित अन्य पास पड़ोस के इलाकों के हजारों श्रद्धालु सूफी दरबार में चादर, फातिहा और शिरनी आदि का नजरान-ए-अकीदत (चढ़ावा) पेश कर लाभांवित होंगे। उर्स प्रबंधन समिति के प्रवक्ता मुनीर अहमद मोमिन द्वारा जारी प्रेस बयान के मुताबिक सज्जादानशीं हजरत रज़ी चिश्ती (रिटायर्ड जिला जज) के मार्गदर्शन व सानिध्य में दो चरणों में संपन्न होने वाले इस उर्स में 23 फरवरी बुधवार को दोपहर 1-45 बजे गुसुल व संदल का कार्यक्रम संपनन होगा। तथा 24 फरवरी गुरूवार को सायं सवा 6 बजे चादरपोशी और रात 9 बजे से महफिले शमा (कव्वाली) का कार्यक्रम होगा। इस साल उर्स शरीफ में भटनी (देवरिया) के मशहूर कव्वाल असलम वारसी की सुफियाना कलामों से महफिले शमा सजेगी। तत्पश्चात 25 फरवरी शुक्रवार को सुबह आख़िरी कुल रंगे महफिल के बाद उर्स शरीफ का समापन होगा। हजरत सूफी साहेब के अनुयायिओं (भक्तों) ने सूफी-संतो के अकीदत मंदों एवं श्रद्धालुओं से अधिकाधिक संख्या में उर्स शरीफ में शामिल होकर सवाबे दारेन हासिल करने की अपील की है।

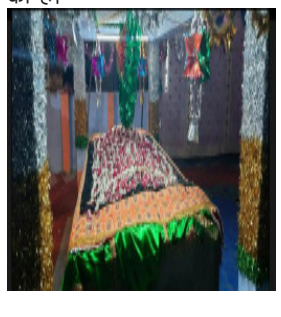

डबल इंजन की सरकार को पूरे विश्व ने सराहा-केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल निर्भीक

बलिया। जिले के फेफना विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी उपेंद्र तिवारी के समर्थन में केंद्रीय

राज्यमंत्री अश्विनी चौबे ने जनसभाओं को संबोधित करते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार ने काम किया उसकी सराहना पूरे विश्व में हो रही है। उत्तर-प्रदेश के बलिया में छठे चरण में चुनाव है। जिसे लेकर विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं के दौरे शुरू हो गए हैं। केंद्रीय राज्यमंत्री अश्विनी चौबे जिले के फेफना विधानसभा क्षेत्र में चुनाव प्रचार किया। जनऊपुर और सोबईबांध में भाजपा प्रत्याशी उपेंद्र तिवारी के पक्ष में जनसभा की। सरकार की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान जिस तरह डबल इंजन की सरकार ने काम किया उसकी सराहना पूरे विश्व में हो रही है। अश्वनी चौबे ने कहा कि फेफना से विधायक एवं मंत्री उपेंद्र तिवारी ने पांच सालों में जनता के बीच रहते हुए सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया है इस दौरान उपेंद्र तिवारी को फेफना का फेफड़ा बताया भाजपा सबका विकास में विश्वास रखती है। भाजपा सरकार में गुंडे और माफिया जेल में है।जनता शांति से रह रही है।व्यापारी चैन से व्यापार कर रही है। उन्होंने उपेंद्र तिवारी को फेफना का फेफड़ा बताया। कहा कि फेफड़ा ठीक रहेगा तो कोरोना अपने आप भाग जाएगा। इस मौके पर सांसद वीरेंद्र सिंह मस्त, टुनजी पाठक, टुनटुन उपाध्याय, उपेंद्र पांडेय, चन्द्रप्रकाश पाठक आदि लोग उपस्थित रहे। पूर्व मंत्री नारद राय के बड़े ने थामा भाजपा का दामन राजनीति में बड़े उलटफेर के तहत मंगलवार को सपा उम्मीदवार नारद राय के बड़े भाई वशिष्ठ राय ने भाजपा का दामन थाम लिया है। यही नहीं वशिष्ठ राय ने भाजपा उम्मीदवार दयाशंकर सिंह को खोरीपाकड़ स्थित अपने पैतृक आवास पर बुलाकर स्वागत भी किया। अचानक घटे इस घटनाक्रम से जिले का सियासी चरम पर पहुंच गया है। कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद नीरज शेखर, ज्ञानेंद्र राय गुड्डू भी मौजूद रहे। सांसद नीरज शेखर ने कहा कि नारद राय की वर्तमान भाषा यह बताने के लिए पर्याप्त है कि वो बौखलाहट में दिमागी संतुलन खो बैठे हैं। इस दौरान पूर्व विधायक शिवशंकर चौहान भी मौजूद रहे।

विश्व हिंदू परिषद के नेता के घर से स्कॉर्पियो चोरी

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रयागराज। विहिप नेता व भारतीय जनता पार्टी के फूलपुर विधानसभा चुनाव संचालन समिति के प्रमुख वीरकाजी गांव निवासी सुरेंद्र कुमार मौर्य जी के निवास स्थान से आज रात अज्ञात चोरों ने उनकी स्कॉर्पिय्यो वाहन चोरी कर ली। जानकारी होने पर मौके पर पहुंचे कोतवाली प्रभारी ने हर संभव मदद का आश्वासन देते हुए जल्द ही चोरों को गिरफ्तार कर गाड़ी बरामद करने की बात कही।

विभिन्न जगहों पर चला सघन वाहन जांच अभियान

सोनभद्र। विधानसभा चुनाव को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए प्रशासन व पुलिस की टीम लगातार जांच अभियान में जुड़ी

हुई है। जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में पुलिस लगातार वाहनों की जांच कर रही है। पड़ोसी राज्यों की सीमा पर संदिग्धों की तलाशी ली जा रही है। इसके तहत मंगलवार को पुलिस उपमहानिरीक्षक/पुलिस अधीक्षक अमरेंद्र प्रसाद सिंह के आदेश पर विधानसभा चुनाव शांतिपूर्ण वातावरण में सकुशल सम्पन्न कराने के लिए पुलिस जांच कर रही है। मंगलवार को थानाध्यक्षों ने अपने-अपने थाना क्षेत्रों में पैदल गश्त करते हुए प्रमुख चौराहों, मार्केट, सार्वजनिक स्थानों तथा जनपद के सीमावर्ती क्षेत्रों पर नाकाबंदी करके सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। संदिग्ध व्यक्तियों, वाहनों, वस्तुओं की गहनता से चेकिंग की गयी। राबर्ट्सगंज कोतवाली पुलिस ने बढ़ौली चौराहा समेत अन्य जगहों पर जांच की। इसी तरह बभनी, मांची, पिपरी, कोन, चोपन, घोरावल करमा समेत अन्य थानों की पुलिस ने वाहनों की जांच की। हालांकि इस दौरान पुलिस को किसी तरह के अवैध संपत्ति या सामानों की बरामदगी की सफलता नहीं मिली। पुलिस ने इस दौरान आमजनमानस को आगामी विधानसभा चुनाव में निर्भीक होकर अपने-अपने मताधिकार का प्रयोग करने हेतु जागरुक भी किया। इसके अतिरिक्त मिशन शक्ति अभियान, यातायात नियमों का पालन करने तथा अन्य सरकारी योजनाओं तथा जारी गाइडलाइन के संबंध में अवगत कराते हुए लोगों को जागरुक किया गया।

हर घर करें जागरूक, पहले करें मतदान, फिर करें जलपान

सोनभद्र। राबर्ट्सगंज नगर स्थित साई अस्पताल परिसर में मंगलवार को मतदाता जागरूकता गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें डा. अनुपमा व डा. संजय सिंह ने कर्मचारियों को अधिक से अधिक मतदान की शपथ दिलाई। साथ ही सभी को मतदान के प्रति जागरूक भी किया गया। यहां डा. अनुपमा सिंह ने कहा कि चुनाव पांच सालों के बाद ही आते हैं। इन चुनावों का मकसद अपने देश और राज्य के लिए अच्छे प्रतिनिधियों का चयन करना होता है, ताकि देश में या राज्य में अच्छी सरकार का गठन किया जा सके। भारत में लोकतंत्र है। इस लोकतंत्र में मतदान से हमें सरकार चुनने का मौका मिला है। लोगों को यह मौका बड़ी मुश्किलों के बाद मिला है। इसलिए चुनाव में हर मतदाता को अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग जरूर करना चाहिए। मतदान में हर मतदाता को हर हाल में सभी को भाग लेना चाहिए। मतदान बहुत ही गंभीर विषय है। मतदाताओं को पूरी सोच विचार के बाद ही किसी प्रत्याशी को वोट देना चाहिए। किसी भी तरह के लालच में आकर वोट नहीं करना चाहिए। ऐसे प्रत्याशी को ही वोट करना चाहिए, जोकि अपने हलके के विकास के प्रति गंभीर हो। अपने हलके के लोगों के दुख सुख में शामिल होने वाला हो। प्रत्येक मतदाता मतदान केंद्र पर पहुंचे और अपने वोट का इस्तेमाल करें। इस दौरान डा. संजय सिंह ने बताया कि आप लोग अपने गांव व घर जा कर सबको जागरूक करें कि पहले हम मतदान करें फिर जलपान करें यह हमारा सकल्प होना चाहिए। इस मौके पर डा. सतीश मौर्या, एडमिनिस्ट्रेटर अखिलेश एम मिश्रा, अब्दुल, दिनेश मौर्या, संगीता गुप्ता, प्रदीप कुमार दुबे, नागेंद्र, आशुतोष मिश्रा, प्रतिमा मौर्या, सरस्वती मिश्रा, अंजू गुप्ता, ज्योत्सना मंडल, गुलाम सरवर, गुड्डी, सूरज मिश्रा, छात्रा स्मिता, शिवानी, सोनाली इत्यादि लोग मौजूद रहे।

शक्तिनगर एसएचओ मिथिलेश मिश्रा ने तेलगवां बॉर्डर पर चलाया वाहन चेकिंग अभियान

(आधुनिक समाचार सेवा)
शैलेन्द्र कुमार

शक्तिनगर (सोनभद्र)। पुलिस उपमहानिरीक्षक/पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अमरेन्द्र प्रसाद सिंह के आदेश के क्रम में विधानसभा चुनाव-2022 को शान्तिपूर्ण वातावरण में सकुशल सम्पनन कराने तथा आमजनमानस में सुरक्षा की भावना के दृष्टिगत आज बुधवार को क्षेत्राधिकारी पिपरी प्रदीप सिंह चंदेल के कुशल नेतृत्व में शक्तिनगर थाना प्रभारी निरीक्षक मिथिलेश कुमार मिश्र द्वारा उत्तर प्रदेश सीमावर्तीय मध्यप्रदेश तेलगंवा बॉर्डर पर नाकाबंदी करके सघन चेकिंग अभियान चलाया गया तथा संदिग्ध व्यक्तियों/वाहनों/वस्तुओं की गहनता से चेकिंग की गयी।

इस दौरान आमजनमानस को आगामी विधानसभा चुनाव में निर्भीक होकर अपने-अपने मताधिकार का प्रयोग करने हेतु जागरुक भी किया गया । इसके अतिरिक्त मिशन शक्ति अभियान, यातायात नियमों का पालन करने तथा अन्य सरकारी योजनाओं तथा जारी गाईडलाइन के सम्बंध में अवगत कराते हुए लोगों को जागरुक किया गया । इस दौरान कांस्टेबल साहब सिंह यादव, आदर्श शुक्ला,महिला कांस्टेबल उमा सिंह,सुशीला आदि मौजूद रहें।

महिलाओं ने पीले परिधान में निकाली कलश यात्रा

भावां (मीरजापुर) । राजगढ़ ब्लाक के भावां गांव में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा शुभारंभ के पूर्व मंगलवार को कलश यात्रा निकाली गई। सैकड़ों की संख्या में विभिनन गांव की महिलाएं पीला वस्त्र धारण कर कलश यात्रा में भाग लिया। भावां से शुरू होकर कलश यात्रा भावां बाजार होते हुए देवपुरा ग्राम के तालाब पर पहुंचा। यहां पुरोहित अंकित दुबे ने विधि विधान के साथ गंगा पूजन कर कलश भरण कराया। इसके बाद कलश यात्रा कथा स्थल पर वापस लौट आया। यात्रा के दौरान महिलाएं राधे राधे और जय कृष्ण के जयकारे लगाने के साथ आगे बढ़ रही थी।कलश यात्रा समापन के बाद वृंदावन से पधारे कथावाचक बृजेश कृष्ण महाराज ने प्रथम दिन श्रीमद्भागवत के महत्व का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा के श्रवण करने से सात जन्मों का पाप कट जाता है। साथ ही कथा व्यक्ति को जीवन जीने की कला के साथ मोक्ष प्राप्ति के साधन मिलते है। मनुष्य तमाम सांसारिक जीवन की बाधाओं को पार करते हुए 84000 योनियों से भटकने से निजात कैसे मिले और उसे ईश्वर धाम कैसे मिले इसके मार्ग को भी श्रीमद्भागवत बताती है। इस अवसर पर शिवराम दुबे, मुकेश दुबे, आनंद प्रकाश सिंह, विजय गौतम, दिव्यांशु दुबे, राहुल गोंड, अनमोल गुप्ता आदि रहे।

नवजात शिशुओं के लिए अस्पताल से मिलेगा बेबी किट

सोनभद्र। मारवाड़ी युवा मंच की बैठक मंगलवार को राबर्ट्सगंज में हुई। यहां आगामी सत्र के लिए सोनभद्र शाखा के पदाधिकारियों का चयन किया गया। इसमें अध्यक्ष सचिन अग्रवाल, महामंत्री शिखर केडिया चुने गए। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच ने नवजात शिशुओं के लिए बेबी किट की व्यवस्था की है। यह किट सरकारी चिकित्सालयों में वितरित किया जाएगा शाखा अध्यक्ष सचिन अग्रवाल ने आगामी कार्यक्रमों पर चर्चा की। इसमें कैंसर स्क्रीनिग शिविर, नवजात शिशुओं के लिए बेबी किट, मतदान के लिए जागरुकता अभियान पर विमर्श किया गया। शाखा सचिव शिखर केडिया ने बताया कि स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और पिछड़े वर्ग में अज्ञानता की वजह से नवजात शिशुओं में बहुत सारी बीमारियां तथा संक्रमण पैदा होने का डर रहता है। कोषाध्यक्ष रितेश अग्रवाल ने बताया कि मतदान करने के लिए लोगों को जागरूक किया जाएगा। बैठक में संरक्षक विजय कनोडिया, संस्थापक अध्यक्ष रवि अग्रवाल, निवर्तमान अध्यक्ष पंकज कनोडिया, पूर्व अध्यक्ष संजय अग्रवाल, प्रदीप खैतान, हिमांशु केजरीवाल, रमेश गोयल, विकास चौधरी, राकेश जालान, विनय अग्रवाल, रोहित केडिया, तरुण केडिया, हर्षित चौधरी, सौरभ चौधरी, मोंटी थर्ड रहे।

भूखे लोगों को सहारा देने के लिए आजीवन चलेगा भंडारा

सोनभद्र। अयोध्या के परम पूज्य स्वामी कमल नयन दास जी महाराज एवम काशी अन्नपूर्णा मंदिर के महंत महामंडलेश्वर शंकर पूरी जी महाराज के आदेशानुसार कसारी रामगढ़ स्थित भिखारी बाबा की कुटिया पर भंडारा प्रतिदिन शुरू कराया गया है। भिखारी भोले ट्रस्ट की उपाध्यक्ष चिता मौर्य व अजय कुमार मौर्य, भक्त बिरजू दास दान दाताओं के आशीर्वाद से 14 फरवरी सोमवार से भिखारी बाबा के कुटिया पर गरीब, आदिवासी, भूले भटके जनों के लिए, गरीब बच्चों के लिए, भूख से तड़प रहे लोगों के लिए आजीवन लवकुश अन्न क्षेत्र चलाने का संकल्प लेते हुए शुरुआत की गई है। भिक्षुक भिखारी जंगली दास बाबा ने बताया कि काशी अन्नपूर्णा मंदिर के महंत स्वामी शंकर पूरी जी महाराज के आदेश पर 14 फरवरी से प्रतिदिन भंडारा चलाने की शुरुआत हुई है। सैकड़ों लोग भंडारे में प्रसाद ग्रहण कर रहे हैं। अब यह लवकुश अन्न क्षेत्र भंडारा सभी के सहयोग से आजीवन चलेगा। रेवती तिवारी, मनोज केशरी, सालिक राम साहू, पवन कुमार गुप्ता आदि ने भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया।

प्रसव के दौरान महिला की मौत के बाद हंगामा

सोनभद्र। राबर्ट्सगंज कोतवाली क्षेत्र के करारी गांव की गायत्री देवी (28) की सोमवार की रात प्रसव के दौरान मौत हो गई। जिला अस्पताल में स्थित जच्चा बच्चा अस्पताल से उसे वाराणसी रेफर किया गया था, जहां चिकित्सक ने उसे देखते ही मृत घोषित कर दिया। इसके बाद परिवार वाले शव लेकर रात में ही जच्चा-बच्चा अस्पताल पहुंचे और वहां लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा करने लगे। परिजन मृत्यु प्रमाण पत्र की मांग पर अड़ गए। मंगलवार को दोपहर में प्रमाण पत्र देने के अस्पताल प्रशासन के आश्वासन पर परिजन शांत हुए। करारी गांव की गायत्री देवी को सोमवार को दोपहर में प्रसव पीड़ा होने पर जिला अस्पताल के जच्चा बच्चा अस्पताल में परिजन ले गए थे। वहां शाम तक उसका उपचार हुआ, लेकिन उसकी स्थिति न संभलने पर अस्पताल से उसे वाराणसी के लिए रेफर कर दिया गया था। इस पर स्वजन उसे वाराणसी ले गए जहां चिकित्सक ने उसे देखते ही मृत घोषित कर दिया। महिला के स्वजनों का कहना है कि वाराणसी में डाक्टर ने जानकारी दी कि कोई नस कट जाने से अत्यधिक रक्तस्त्राव हुआ जिससे महिला की मौत हो गई। इसके बाद स्वजन महिला का शव लेकर जच्चा बच्चा अस्पताल लौट आए। यहां स्वजनों ने महिला की मौत को लेकर हंगामा शुरू कर दिया। फिर स्वजन मृत्यु प्रमाण पत्र मांगने लगे लेकिन अस्पताल प्रशासन ने यह कहकर मृत्यु प्रमाण पत्र देने से मना कर दिया कि महिला को जीवित हालत में यहां से वाराणसी रेफर किया गया था। मंगलवार को दोपहर तक इसको लेकर हंगामा होता रहा। स्वजनों का आरोप था कि अस्पताल प्रशासन की लापरवाही के कारण यह मौत हुई है। स्थानीय लोगों के हस्तक्षेप के बाद जच्चा बच्चा अस्पताल ने मृत्यु प्रमाण पत्र देने का आश्वासन दिया तब परिजन शांत हुए।

प्रधानाध्यापक से लूटे गए दो लाख रुपये बरामद, आरोपित फरार

कछवां (मीरजापुर) । क्षेत्र के एक माल के पास से चार फरवरी को प्रधानाध्यापक से उचक्कों द्वारा लूटे गए दो लाख रुपये को पुलिस ने बरामद कर लिया है। हालांकि दोनों आरोपित पुलिस को चकमा देकर फरार हो गए। क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय बाड़ापुर के प्रधानाध्यापक आनंद प्रकाश त्रिपाठी निवासी विदापुर स्टेट बैंक से चार फरवरी को दो लाख रुपये निकाल कर झोले में रखकर पैदल आटो पकड़ने के लिए जा रहे थे। सीवी मार्ट के पास लगे हैंडपंप के पास पेड़ पर रुपये वाले झोले को टांगकर कपड़े में लगे गंदगी को साफ करने लगे। इसी दौरान उचक्कों ने झोला गायब कर दिया। सीसी फुटेज के आधार पर एक संदिग्ध बालक को पुलिस हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही थी। थाना प्रभारी रामस्वरूप वर्मा ने बताया कि अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। इसी दौरान सूचना के आधार पर कटका ओवरब्रिज के पास गड़ौली पड़ाव वाले हनुमान मंदिर के पास छापेमारी की गई, यहां पुलिस को देख दो व्यक्ति बाइक चालू कर भाग गए। इनमें से बाइक पर पीछे बैठे व्यक्ति का बैग बरामद हुआ, जिसमें दो लाख रुपये थे। हालांकि बाइक सवार दोनों आरोपित भागने में सफल रहे। बताया कि दोनों की गिरफ्तारी जल्द ही कर ली जाएगी।

नाबालिग की अभिरक्षा को लेकर जेल अधीक्षक गुरमा तलब

सोनभद्र। किशोर न्याय बोर्ड के प्रधान मजिस्ट्रेट विनय कुमार सिंह ने नाबालिग की अवैध अभिरक्षा के मामले में जिला जेल गुरमा के अधीक्षक को तलब किया है। इससे अफरातफरी की स्थिति है। जिला कारागार से संप्रेक्षण गृह मीरजापुर में नाबालिक की अभिरक्षा आवासित किए जाने के आदेश के बावजूद जेल अधीक्षक गुरमा द्वारा अभिरक्षा नहीं बदले जाने पर प्रधान मजिस्ट्रेट विनय कुमार सिंह किशोर न्याय बोर्ड सोनभद्र ने नाराजगी जाहिर की है। मजिस्ट्रेट ने पूर्व में भी जिलाधिकारी मीरजापुर से ऐसे ही मामले को लेकर जवाब तलब किया था। गुरमा कारागार में एक नाबालिग अभिरक्षा में है। किशोर न्याय बोर्ड के प्रधान मजिस्ट्रेट ने जेल अधीक्षक को करीब तीन दिन पूर्व आदेश दिया था कि नाबालिग को राजकीय संप्रेक्षण गृह मीरजापुर के लिए स्थानांतरित कर उसे आवासित किया जाए। इस आदेश के तीन दिन बीतने के बावजूद जेल अधीक्षक ने मजिस्ट्रेट के आदेश को गंभीरता से नहीं लिया। उन्होंने नाबालिग को संप्रेक्षण गृह नहीं भेजा। इसकी जानकारी होने पर मजिस्ट्रेट ने आदेश की अवमानना में गुरमा जिला जेल के अधीक्षक को तलब किया है। मजिस्ट्रेट ने किशोर के अभिरक्षा को अवैध मानते हुए उसे मीरजापुर भेजने का आदेश जारी किया था। मजिस्ट्रेट ने पूर्व में भी जिलाधिकारी मीरजापुर से जवाब तलब किया था। तब चार नाबालिग किशोरों को बिना बोर्ड की अनुमति लिए संप्रेक्षण गृह मीरजापुर से जिला कारागार गुरमा स्थानांतरित कर दिया गया था। इस पर प्रधान मजिस्ट्रेट द्वारा जिलाधिकारी मीरजापुर का आदेश संज्ञान लेते हुए आदेश निरस्त कर दिया था और नाबालिक किशोरों को वापस मीरजापुर संप्रेक्षण गृह भेजा गया था। गुरमा जेल में अभिरक्षा में बंद किशोर की अभिरक्षा को न बदले जाने का स्पष्ट कारण नहीं बताते हैं तो जेल अधीक्षक के खिलाफ बोर्ड विधिक कार्यवाही प्रारंभ करेगा।

मतदान केंद्र का लिया जायजा, सखी मतदान केंद्र का चयन

घोरावल (सोनभद्र)। घोरावल विधानसभा में प्राथमिक विद्यालय बिसरेखी तथा प्राथमिक विद्यालय केकराही को आदर्श मतदान केंद्र तथा प्राथमिक विद्यालय घोरावल तृतीय को गुलाबी, सखी मतदान केंद्र के लिए चुना गया है। आदर्श मतदान केंद्र पर निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदान को अधिक महत्व देने के उद्देश्य से मतदाता के लिए मतदान के संपूर्ण अनुभव को आनंद दायक एवं पुष्टिकारक बनाने के लिए संकल्पना की गई है। ऐसे मतदान केंद्र पर भवन एवं सुविधाओं की वास्तविक संरचना में पेंटिग, आसानी से पहुंच, फर्नीचर, फाइबर ग्लास का मतदान कक्ष, डिस्प्ले साइन बोर्ड, मतदाता सहायता बूथ और मतदाताओं के जोरदार स्वागत की व्यवस्था और बेहतर कतार प्रबंधन और मतदान स्टाफ और स्वयंसेवी उनका व्यवहार तीन प्रमुख बिदुओं तथा मतदान के लिए आवश्यक सुविधाओं का एक माडल प्रस्तुत किया जाएगा। इसके साथ ही साथ प्राथमिक विद्यालय घोरावल तृतीय (गनी खां चक) को सखी या पिक मतदान केंद्र के रूप में चिन्हित किया गया है। यह केंद्र महिलाओं द्वारा पूर्णरूपेण संचालित मतदान केंद्र होगा। इस मतदान केंद्र पर तैनात महिलाएं अपनी पसंद का कोई भी रंग पहन सकती हैं। मतदान केंद्र में पर्दानशीं महिलाओं के लिए विशेष व्यवस्था की जाएगी जो उनकी निजता सम्मान एवं संस्था का ध्यान रखते हुए प्रत्येक क्लोजर में किसी महिला मतदान अधिकारी द्वारा उसकी पहचान तथा उनकी बाई तर्जनी पर अमिट स्याही लगाने का विशेष इंतजाम होगा। इन महिलाओं का संचालन पूर्ण रूप से महिलाओं द्वारा किया जाएगा, इसलिए इन्हें सखी मतदान केंद्र नाम दिया गया है। घोरावल एसडीएम रमेश कुमार ने कई मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। वहां की व्यवस्था के बारे में जानकारी ली। आदर्श व गुलाबी, सखी मतदान केंद्र के बारे में उन्होंने जानकारी लेकर यहां के व्यवस्था की समीक्षा की।

एक व्यक्ति गिरफ्तार चालान

विढमगंज (सोनभद्र)। स्थानीय थाना पुलिस ने मंगलवार को एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। थाना प्रभारी सूर्यभान ने बताया कि मुड़ीसेमर ग्राम पंचायत के मलिया नदी के पास से भिखारी यादव पुत्र स्व. सुखलाल यादव निवासी हरपुरा को गिरफ्तार किया गया है। उसके पास से झोले से एक चाकू बरामद किया है। पुलिस ने उसका आर्म्स एक्ट में चालान कर दिया।

तालाब के अस्तित्व को बचाने पर लघु शोध होगा प्रस्तुत

मीरजापुर । राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में ओनम सिंह 16 फरवरी को आनलाइन लघु शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे। बरौधा गांव में तालाब के अस्तित्व को बचाने नामक परियोजना पर लघु शोध प्रस्तुत कर रहे हैं। इस आदेश के तीन दिन बीतने के बावजूद जेल अधीक्षक ने मजिस्ट्रेट के आदेश को गंभीरता से नहीं लिया। उन्होंने नाबालिग को संप्रेक्षण गृह नहीं भेजा।राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रव्यापी गतिविधि राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का राष्ट्रीय आयोजन आनलाइन 18 फरवरी तक गुजरात साइंस एंड टेकनेलॉजी द्वारा किया जाएगा। पूरे देश के राज्य स्तर पर चयनित बाल विज्ञानी एवं 10 आसियान कंट्री के बच्चे प्रतिभाग करेंगे। समन्यवक सुशील कुमार पांडेय, जिला आयोजन समिति के अकेडमिक कोआर्डिनेटर डा. जयपी राय, एसके गोयल, डा. एसएन सिंह, सुशील कुमार पांडेय, सत्य नारायण प्रसाद ने बधाई दी।

साफई करने के बहाने जेवर लेकर महिला हुई फरार

हलिया । क्षेत्र के गड़बड़ा धाम निवासी भाजपा के मंडल अध्यक्ष ज्ञानेश्वर दुबे ने मंगलवार को जेवर गायब करने के मामले में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। तहरीर में बताया कि सोमवार को अज्ञात महिला द्वारा धोखाधड़ी करके घर से मां, भाभी और पत्नी से साफ करने के बहाने जेवर लेकर फरार हो गई। काफी खोजबीन की गई, लेकिन उक्त महिला का कही पता नहीं चला। थानाध्यक्ष अनिल कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर मिली है। मामले की जांच करते हुए आरोपित महिला का भी पता लगाया जा रहा है। स्कूल का ताला तोड़कर लैपटाप ले गए चोर बभनी ग्राम में चोर स्कूल का ताला तोड़कर लैपटाप उठा ले गए। कार्यालय में रखे सामान भी तितर-बितर कर दिए। चोरी की जानकारी पर प्रबंधक जितेन्द्र बहादुर सिंह ने घटना की तहरीर थाने पर दी। बाइक-साइकिल की टक्कर में दो क्षेत्र के विसौरा खुर्द ग्राम निवासी साइकिल सवार शंकर राम व बाइक सवार अहरौरा के सियरहां (जंगल महाल) ग्राम निवासी पिटू सड़क हादसे में घायल हो गए। हाजीपुर मार्ग पर विसौरा खुर्द ग्राम के पास दोनों में टक्कर हुई थी। घायलों को निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है।

पति को आजीवन व सास को 10 वर्ष की सजा

मीरजापुर । जनपद न्यायाधीश शिव कुमार प्रथम ने दहेज के लिए पतने की हत्या के मामले में पति को आजीवन कारावास और सास को 10 वर्ष की सजा सुनाई। साथ ही दोनों को दस-दस हजार रुपये के जुर्माने से दंडित भी किया। अभियोजन के अनुसार मुकेश कुमार सिंह निवासी बघोड़ा थाना अदलहाट की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज किया गया। उन्होंने 17 अप्रैल 2016 को अपनी भतीजी निकिता सिंह की शादी जितेंद्र कुमार सिंह उर्फ विकास निवासी ग्राम डगहरिया थाना मिर्जामुराद जनपद वाराणसी के साथ की थी। अपने साम?र्थ्य के अनुसार नकद रुपये, गहने, कपड़े आदि सामान दान स्वरूप दिए थे। विदाई के समय जितेंद्र और उसकी मां इंद्रावती देवी, बड़े पिता बेचनराम सिंह, बड़ी मां हीरावती देवी, चचेरा भाई संजू सिंह व परमेंद्र और पिटू मौसेरी बहन सीमा तथा मामा अमित द्वारा मीरजापुर शहर में भूमि खरीदने के लिए दोबारा दहेज में पांच लाख रुपये की और मांग करने लगे। ससुराल जाने पर निकिता को दहेज की मांग पूरी न होने पर परिवार वालों द्वारा मारा-पीटा जाने लगा।

प्राइवेट अस्पतालों की जांच करेगी स्वास्थ्य विभाग की टीम

सोनभद्र। जिले में संचालित हो रहे प्राइवेट अस्पतालों व क्लीनिकों की जांच होगी। इसके लिए मुख्य चिकित्साधिकारी डा. आरएस ठाकुर ने तीन सदस्यी टीम गठित कर दी है। टीम की अगुवाई अपर मुख्य चिकित्साधिकारी करेंगे। यह टीम अस्पतालों के पंजीकरण समेत अन्य नियमों की जांच करेगी। मानक के अनुरूप न संचालित होने वाले अस्पतालों, क्लिनिकों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। जिले में तमाम नर्सिंग होम, क्लिनिकों व मेडिकल स्टोर का संचालन हो रहा है। इसमें तमाम अस्पतालों का संचालन बगैर पंजीकरण के भी चल रहा है। जिन अस्पतालों का पंजीकरण है भी उनमें स्वास्थ्य विभाग के मानकों का पालन नहीं किया जा रहा है। जिले के ज्यादातर अस्पतालों में सालिड वेस्ट मैनेजमेंट सिस्टम नहीं है। इससे यहां से निकलने वाली गंदगी इधर-उधर फेंकी जाती है। यह पर्यावरण को प्रभावित करने के साथ ही लोगों के स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। तमाम जगहों पर अस्पतालों से निकलने वाले कचरे बिखरे नजर आते है। अस्पतालों में सफाई आदि की व्यवस्था नहीं होती है। निर्धारित मानकों को दर किनार कर दो तीन कमरों में ही अस्पताल का संचालन किया जाता है। विभिन्न रोगों के विशेषज्ञ का बोर्ड लगाकर कुछ अस्पताल महज मरीजों को ठगने का काम करते है। ऐसे अस्पतालों पर शिकंजा कसने के लिए सीएमओ ने तैयारी कर ली है। सीएओ आरएस ठाकुर ने कहा कि फर्जी तरीके से संचालित होने वाले अस्पताल बंद किये जाएंगे। जो अस्पताल मानक के अनुसार नहीं चल रहे है, उन पर भी कार्रवाई की जाएगी। इसको लेकर विभागीय स्तर पर अपर मुख्य चिकित्साधिकारी जीएस यादव के नेतृत्व में टीम गठित कर दी गई है। टीम के रिपोर्ट के आधार पर उचित कार्रवाई की जाएगी।

कभी भी जुल्म की टहनी न फूली है न फलती है

जमालपुर (मीरजापुर) । क्षेत्र के शेरवां गांव में सोमवार की रात राजेंद्र प्रसाद द्विवेदी के आवास पर कविता गांव में एवं कला निधान संस्था वाराणसी के सौजन्य से कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण के बाद चंदौली से आए कवि अवधेश दास की सरस्वती वंदना से हुआ। वाराणसी से आई कवियत्री डा. रंजना राय ने दिन फागुन के फिर आए नयन ललचा डा. धर्म प्रकाश मिश्र ने अपनी व्यंग रचना कौन कहता है गिद्ध समाज से लुप्त हुए पेड़ों के बजाए कुर्सियों पे पाए जाते हैं सुनाकर श्रोताओं की तालियां बटोरी। धर्मदेव चंचल ने रेत पे चल रहे बर्फ में गल रहे खाक खा-खा के भी धूप में जल रहे वाराणसी से आए कवि झगडू भइया ने होया मंदिर में चाहे मस्जिद में तूं प्रेम क दियना जरावल करा कवि उमेश चंद्र द्विवेदी ने तुम्हारे बाल लहराये तो मैं पुरवाइयां लिख दूं नरसिंह साहसी ने जुगत करना मिलाने की किसी में फूट मत डाला अवधेश दास ने कभी भी जुल्म की टहनी न फूली है न फलती है ।

सड़क पर मिला वृद्ध का शव

आसनडीह (सोनभद्र)। बभनी थाना क्षेत्र के बचरा गांव में बुधवार की सुबह नधीर (70) का शव सेमरिया मेन रोड पर मिला। शरीर पर किसी तरह के चोट के निशान नहीं हैं। थाना प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार सिंह ने बताया कि मृतक के स्वजन ने पुलिस को घटना की कोई सूचना नहीं दा ग्रामीणों ने नधीर का शव सड़क पर देखा तो ग्राम प्रधान को जानकारी दी। इस पर प्रधान समेत भारी भीड़ मौके पर इकट्ठा हो गई। लोगों ने मृतक की पहचान नधीर के रूप में की। वह घघरी गांव का निवासी था। नधीर अपनी बेटी के ससुराल डूमरहर जा रहे थे। रास्ते में मौत हो गई। परिवार के लोगों ने शव का पोस्टमार्टम नहीं कराया। शव अपने घर ले गए और उसका दाह संस्कार कर दिया।

वेस्टइंडीज को हल्के में लेने की भूल क्यों नहीं की जा सकती गावस्कर ने बताया कारण

नई दिल्ली। ये वनडे सीरीज से भी दिलचस्प रही जो नीलामी से एक दिन पहले ही खत्म हुई थी। इस नीलामी ने कुछ खिलाड़ियों को अचानक से करोड़पति बनाने के अलावा एक और महत्वपूर्ण काम किया और वो ये कि इससे भारत

और वेस्टइंडीज के बीच होने वाली टी-20 सीरीज और उसके बाद भारत-श्रीलंका टी-20 सीरीज के लिए दिलचस्पी बढ़ गई। अब सारा फोकस उन खिलाडियों पर होगा जिन्हें अलग-अलग फ्रेंचाइजी ने अपने साथ जोड़ा है। फिर चाहें वे भारतीय हों, वेस्टइंडीज का या फिर कोई श्रीलंकाई खिलाड़ी ही क्यों न हो। इन मुकाबलों पर निगाहें जमाकर फ्रेंचाइजी ये संकेत हासिल कर पाएंगी कि उन्होंने जिन खिलाडियों पर दांव लगाया है वे पैसा वसूल हैं या नहीं। इसके अलावा खुद खिलाडियों पर अपेक्षाओं का काफी बोझ होगा, जो इन मुकाबलों में अलग कहानी बयां कर सकता है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि नीलामी सभी खिलाडियों के जीवन बदल देने वाली हकीकत है जो उनके और उनके परिवार के सुरक्षित भविष्य का दरवाजा खोलती है। इसके चलते ऐसा हो सकता है कि कुछ खिलाड़ी अपने देश के लिए खेलते हुए उतनी गंभीरता नहीं दिखाएं, विशेष रूप से तब जब आइपीएल पास हो। ऐसा चोटिल होने से बचने, आइपीएल के लिए फिट रहने और आइपीएल अनुबंध के साथ मिलने वाले फायदों से बचने के लिए किया जाता है। ऐसे में बाउंड्री के पास किसी तरह की डाइव या स्लाइड नहीं लगाई जाती या तेज थ्रो नहीं फेंके जाते क्योंकि इससे नुकसान होने का डर रहता है जिससे चलते आइपीएल से छुट्टी हो सकती है जो खिलाड़ी नीलामी में चूक गए उनके पास ये साबित करने का मौका होगा कि उन्हें नहीं चुने जाने का फ्रेंचाइजियों का फैसला गलत था और अब जबकि दो नई टीमें भी आइपीएल से जुड़ गई हैं तो किसी खिलाड़ी के चोटिल होने की सूरत में एक छोटा सा मौका इन खिलाडियों के पास भी हो सकता है। ये खिलाड़ी सीरीज में बेहद खतरनाक साबित होंगे क्योंकि वे अपनी छाप छोड़ने का इंतजार कर रहे हैं। वनडे सीरीज में आसान जीत के बाद भारतीय टीम टी-20 सीरीज में भी जीत की दावेदार होगी, लेकिन दो बार की टी-20 विश्व चैंपियन वेस्टइंडीज की टीम को हल्के में लेने की भूल नहीं की जा सकती। जब से आइपीएल की शुरुआत हुई है तब से अब तक लीग में वेस्टइंडीज के खिलाडियों ने कई मैचों की किस्मत पलटकर रख दी है और भारतीय टीम इस बात को अच्छी तरह जानती होगी। ऐसे में तैयार हो जाइए एक ऐसी टक्कर के लिए जो सीरीज की आखिरी गेंद तक जा सकती है।

वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टी20 में किन 11 खिलाडियों के साथ उतरेगा भारत कोहली करेंगे रोहित से साथ ओपनिंग

नई दिल्ली। भारत और वेस्टइंडीज के बीच खेली जाने वाली तीन मैचों की टी20 सीरीज की शुरुआत आज हो रही है। कोलकाता के इडेन गार्डन्स स्टेडियम में यह मैच खेला जाना है। इस मुकाबले से पहले ओपनर केएल

राहुल, आलराउंडर अक्षर पटेल और वाशिंग्टन सुंदर चोटिल होकर सीरीज से बाहर हो चुके हैं। ऐसे में भारतीय टीम पहले टी20 में कौन सी प्लेइंग इलेवन के साथ उतरेगी सबको इसकी उत्सुकता है। टी20 में भारत के लिए केएल राहुल और रोहित शर्मा की ओपनिंग जोड़ी हिट है लेकिन वेस्टइंडीज के खिलाफ इशान किशन पारी की शुरुआत करते नजर आ सकते हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे वनडे में चोटिल होने की वजह से राहुल सीरीज में नहीं खेल पाएंगे। वैसे विराट कोहली को भी ओपनिंग में रोहित के साथ भेजा जा सकता है। बल्लेबाजी क्रम में तीसरे नंबर पर विराट कोहली नजर आएंगे इसके बाद विकेटकीपर बल्लेबाज रिषभ पंत को भेजा जा सकता है। वहीं इसके ठीक बाद सूर्यकुमार यादव की बल्लेबाजी आती है। वैसे कोच राहुल द्रविड़ मैच की स्थिति के हिसाब से बल्लेबाजी में परिवर्तन भी कर सकते हैं। बल्लेबाजी के लिए नीचले क्रम में मजबूती देने के लिए श्रेयस अय्यर को छठे स्थान पर रखा जा सकता है। इसके बाद गेंदबाजी के साथ बल्लेबाजी में दम दिखाने वाले दीपक चाहर और शार्दुल ठाकुर की बारी आएगी। कुलदीप यादव को वाशिंग्टन सुंदर को चोटिल होने के बाद टी20 सीरीज में मौका दिया गया है। ऐसे में कप्तान रोहित शर्मा स्पिन जोड़ी कुलचा यानी युजवेंद्र चहल और कुलदीप को साथ उतार सकते हैं। मोहम्मद सिराज तेज गेंदबाजी दल और शार्दुल ठाकुर का साथ मिलेगा। ये तीनों ही टीम के लिए विकेट चटकाने का काम करते रहे हैं। दीपक को शुरुआती ओवर में विकेट हासिल करने के लिए जाना जाता है जबकि जोड़ी तोड़ने में शार्दुल माहिर हैं। रोहित शर्मा (कप्तान), इशान किशन, विराट कोहली, रिषभ पंत (विकेटकीपर), सूर्यकुमार यादव, श्रेयस अय्यर, दीपक चाहर, शार्दुल ठाकुर, कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल, मोहम्मद सिराज

रोहित कर रहे थे प्रेस कांफ्रेंस पीछे से हुई अनाउंसमेंट, 'थर्ड वर्ल्ड वार का काउंटडाउन आन

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम का वनडे सीरीज में 3-0 से क्लीन स्विप करने के बाद टीम इंडिया अपने विजयी क्रम को बनाए रखने के लिए टी20 सीरीज में भी पूरी तरह से तैयार दिख रही है। अब

दोनों देशों के बीच तीन मैचों की टी20 सीरीज खेली जाएगी और इसका पहला मैच बुधवार को कोलकाता में खेला जाएगा। इस मुकाबले से ठीक एक दिन पहले यानी मंगलवार को रोहित शर्मा ने वर्चुअल प्रेस कांफ्रेंस किया, लेकिन उनके बोलने के दौरान एक ऐसी घोषणा हुई कि वो अचानक से रुक गए, लेकिन कुछ सेकेंड के बाद फिर उन्होंने बोलना शुरू कर दिया। इस वर्चुअस प्रेस कांफ्रेंस के दौरान जब रोहित शर्मा कोलकाता के ग्राउंड की कंडीशन के बारे में बात कर रहे थे तभी अचानक से एक आवाज पीछे से आई जिसमें कहा जा रहा था कि 'थर्ड वर्ल्ड वार का काउंटडाउन आन'। इस आवाज को सुनकर रोहित शर्मा भी रुक गए, लेकिन महज कुछ सेकेंड के बाद जैसे ही ये आवाज आनी बंद हो गई, उन्होंने फिर से बोलना शुरू कर दिया। अब इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। हालांकि बीच में इस तरह की आवाज आने से रोहित शर्मा चौक गए साथ ही थोड़े नाराज भी दिखे। आपको बता दें कि इस प्रेस कांफ्रेंस में रोहित शर्मा ने विराट कोहली के बारे में कहा था कि उनकी मानसिक स्थिति बिल्कुल ठीक है। वहीं उन्होंने मीडिया से आग्रह किया कि उन्हें कुछ दिन के लिए अकेला छोड़ दें और फिर सबकुछ ठीक हो जाएगा। वहीं रोहित शर्मा ने ये भी बताया कि आइपीएल का मेगा आक्शन खत्म हो गया है और उन्होंने टीम के खिलाडियों से कहा है कि वो अब पूरी तरह से भारत के लिए अपने बेस्ट प्रदर्शन पर ध्यान दें।

मैं तुम्हारे साथ क्रिकेट खेलना मिस करूंगा डेविड वार्नर का केन विलियमसन के लिए पोस्ट

नई दिल्ली। आस्ट्रेलिया के ओपनर बल्लेबाज डेविड वार्नर ने बुधवार को कहा कि वह इंडियन प्रीमियर लीग में सनराइजर्स हैदराबाद में केन विलियमसन के साथ क्रिकेट खेलना मिस करेंगे। वार्नर ने इंस्टाग्राम पर विलियमसन के साथ तस्वीर पोस्ट की और

उन्होंने पोस्ट को कैप्शन दिया, 'विलियमसन के साथ ब्रेकफास्ट टाइम की याद आएगी। भाई मैं आपके साथ क्रिकेट खेलना मिस करूंगा। गौरतलब है कि वार्नर को सनराइजर्स हैदराबाद ने रिटेन नहीं किया था और फिर बाएं हाथ के बल्लेबाज को आइपीएल मेगा आक्शन में दिल्ली कैपिटल्स ने खरीदा था। वहीं विलियमसन आईपीएल में हैदराबाद की फ्रेंचाइजी की अगुवाई करेंगे। पिछले सीज़न में वार्नर को पहले हैदराबाद के कप्तान पद बर्खास्त किया गया था और फिर उन्हें प्लेइंग इलेवन से भी बाहर कर दिया गया था। फ्रेंचाइजी और उनके बीच मनमुटाव की खबरें भी सामने आई थी। ऐसे में अब दोनों की राह जुदा हो गई हैं। साल 2015 में वार्नर को हैदराबाद की कप्तानी की भूमिका दी गई थी। वह प्लेआप में अपनी टीम को पहुंचाने में विफल रहे थे, लेकिन उन्होंने 2015 सीजन में सबसे अधिक रन (562) बनाए और आरेंज कैप जीती। अगले सीजन में टीम ने फाइनल में आरसीबी को हराकर 2016 का खिताब अपने नाम किया। उन्होंने फाइनल में 38 गेंदों में 69 रनों के साथ शानदार योगदान दिया और टूर्नामेंट को दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले (848) बल्लेबाज रहे। टीम 2017 में फाइनल में जगह बनाने में विफल रही, लेकिन 58.27 की औसत 641 रन बनाए और फिर आरेंज कैप अपने नाम किया। आइपीएल 2022 इस साल मार्च के आखिरी हफ्ते में शुरू होने वाला है। वार्नर अब रिषभ पंत की अगुवाई में खेलते नजर आएंगे। वह इससे पहले भी दिल्ली से खेल चुके हैं। आइपीएल में उन्होंने अपने करियर की शुरुआत दिल्ली के तरफ से ही उन्होंने की थी। टूर्नामेंट में उनका बैटिंग रिकार्ड भी शानदार है। उन्होंने 41.6 की औसत से रन बनाए हैं। 150 मैचों की 150 पारियों में उन्होंने चार शतक की मदद से 5449 रन बनाए हैं। उनका स्ट्राइक रेट 139.97 का रहा है। उहोने 50 फिफ्टी भी जमाए हैं। युवा क्रिकेटर पृथ्वी शा उनके ओपनर जोड़ीदार होंगे।

रोहित शर्मा को टी20 फार्मेट में केएल राहुल नहीं इस बल्लेबाज के साथ करनी चाहिए ओपनिंग, भज्जी ने दी सलाह और बताया कारण

नई दिल्ली। भारत और वेस्टइंडीज के बीच तीन मैचों की टी20 सीरीज का पहला मैच बुधवार को खेला जाएगा। इस मुकाबले से पहले टीम इंडिया के पूर्व स्पिनर हरभजन सिंह ने बताया

कि भारतीय पारी की शुरुआत रोहित शर्मा के साथ किसे करनी चाहिए। केएल राहुल टी20 सीरीज से पहले ही चोटिल हो गए थे और वो तीनों टी20 मैच नहीं खेलेंगे। वहीं इस वक्त टीम में ओपनर की भूमिका निभाने के लिए ईशान किशन और रितुराज गायकवाड़ हैं और इन दोनों में से कोई एक रोहित शर्मा के साथ पारी की शुरुआत कर सकता है। अब भारत के पूर्व स्पिनर हरभजन सिंह से स्टार स्पोर्ट्स के शो गेम प्लान पर पूछा गया कि क्या ईशान किशन को टी20 क्रिकेट में भारत को बैकअप ओपनर के रूप में तैयार किया जाना चाहिए। इस सवाल के जवाब में, हरभजन ने सुझाव दिया कि भारत को राहुल और किशन को टी20ई प्लेइंग इलेवन में शामिल करना चाहिए। हरभजन सिंह ने कहा कि अगर केएल राहुल पांचवें नंबर पर बल्लेबाजी करते हैं तो ईशान किशन कप्तान रोहित शर्मा के साथ पारी की शुरुआत कर सकते हैं। हरभजन सिंह ने कहा कि ईशान किशन को तैयार करने की जरूरत नहीं है क्योंकि वो वो एक तैयार खिलाड़ी हैं। आपको उसे खेलने का मौका देना होगा और आपको सोचना होगा कि आप उन्हें किस तरह से प्लेइंग इलेवन में जगह दो सकते हैं। अगर केएल राहुल वनडे में नंबर पांच पर बल्लेबाजी कर सकते है तो टी20 फार्मेट में ऐसा क्यों नहीं हो सकता है। भज्जी ने कहा कि केएल राहुल वनडे में नीचे आते है तो वो बड़े शाट खेलने में सक्षम होते है।इसलिए अगर वह टी20 में नंबर 5 पर बल्लेबाजी करते हैं, तो मुझे लगता है कि यह कोई बुरी बात नहीं होगी, क्योंकि उनके आने से आपका मध्यक्रम और मजबूत होगा। वहीं अगर आप टी20 के पहले 6 ओवर में 40-60 रन चाहते है तो आपको ईशान किशन जैसे निडर बल्लेबाज की जरूरत है।

इस खिलाड़ी को मिस कर रहे कीरोन पोलार्ड कहा- टीम में खुले दिल से करेंगे स्वागत

कोलकाता। लिमिटेड ओवर्स क्रिकेट में वेस्टइंडीज के कप्तान कीरोन पोलार्ड ने कहा है कि स्टार बल्लेबाज शिमरोन हेटमेयर जल्द ही टीम में वापसी करेंगे। हेटमायर आखिरी बार नवंबर 2021 में वेस्टइंडीज के लिए खेले थे और पोलार्ड खुले हाथों से बल्लेबाज का स्वागत करने के लिए तैयार है। ईएसपीएनक्रिकइंफो के अनुसार उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि कोच ने शिमरोन के अपने आकलन पर बात की है। मुझे शिमरोन की याद आती है जब वह आसपास नहीं होते हैं। वह एक युवा खिलाड़ी और अपने आप में एक सुपरस्टार हैं। वह सुधार करेंगे और बहुत जल्द वेस्टइंडीज टीम में वापस आएंगे। पोलार्ड ने आगे कहा, 'मैं उन्हें टीम में देखने के लिए उत्सुक हूं। हम जानते हैं कि एक व्यक्ति के रूप में वह क्या कर सकते हैं और उनका भविष्य उज्ज्वल है। आप 25 साल के लड़के को कभी भी नजरअंदाज नहीं सकते। शिमरोन मुझे काफी पसंद हैं और वह यह जानते हैं। हम सभी यह जानते हैं। टीम में वापसी करने के लिए उन्हें मेहनत करने की जरूरत है। हम उनका खुले दिल से स्वागत करेंगे।' वह सुधार करेंगे और बहुत जल्द भारत और वेस्टइंडीज के बीच बुधवार से कोलकाता के ईडन गार्डन्स में शुरू होने वाले तीन टी20 मैच खेले जाएंगे। भारत ने पिछले हफ्ते वनडे सीरीज में वेस्टइंडीज को 3-0 से मात दी थी। मेहमान टीम के कप्तान पोलार्ड तीन में से दो मैच चोटिल होने के कारण नहीं खेल पाए थे। उ?की जगह निकोलस पूरन ने कप्तानी की थी। वनडे सीरीज में टीम की बल्लेबाजी काफी लचर रही थी। गेंदबाजों ने बेहतर प्रदर्शन किया था। ऐसे में टी-20 सीरीज से पहले ईडन गार्डन्स के तौर पर गेंदबाजों के लिए इसमें बहुत

विकेट के बारे में बोलते हुए पोलार्ड ने कहा, 'मुझे लगता है कि यह एक बहुत अच्छा विकेट है। जाहिर कुछ होगा। रात में मौमस ठंडा होता है और ओस की वजह से गेंद बल्ले पर भी आएगी।

राशिफल

मेष-: आज के दिन आप खेलकूद में हिस्सा ले सकते हैं, जिससे आप स्वस्थ रहेंगे. इस दिन निवेश करने से बचना चाहिए। आपका मजाकिया स्वभाव सामाजिक मेलजोल वाले स्थानों पर आपकी लोकप्रियता बढ़ाएगा।

वृष-: आज स्वयं की मनोकामना पूरी करने के प्रयास प्रभावी रहेंगे. सामान्य तौर पर आज आपको किसी बात का बुरा नहीं लगेगा। परिवार में उलझा हुआ मामला आसानी से सुलझ जाएगा।

मिथुन-: आज अत्यधिक तनाव के कारण मानसिक और शारीरिक नुकसान भी हो सकता है. थोड़ा आराम करें और तनाव कम करें। अतीत में आपको अपनी मेहनत का फल मिल सकता है।

कर्क-: स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है. अगर आप समझदारी से काम लेंगे तो आज आप अतिरिक्त पैसा कमा सकते हैं।

सिंह-: आज का दिन शानदार रहने वाला है। खुश रहो क्योंकि अच्छा समय आ गया है। कोई नया विचार आपको आर्थिक लाभ देगा।

कन्या-: आज आपका रचनात्मक कार्य लाभकारी रहेगा. आज भागदौड़ रहेगी। कोई दुखद समाचार मिल सकता है। आज आप परिवार के लिए समय निकाल सकते हैं, बाहर जाने का प्लान बनाएं तो बेहतर होगा।

तुला-: किसी पुराने मित्र से मुलाकात आपको प्रसन्न करेगी। अनपेक्षित खर्चे आर्थिक रूप से आप पर बोझ डाल सकते हैं।

वृश्चिक-: आज आप शुभ कार्यों में शामिल होंगे. पारिवारिक सुख और धन में वृद्धि होगी। कुछ सकारात्मक बदलाव करने होंगे।

धनु-: आज के दिन आप खेलकूद में हिस्सा ले सकते हैं, जिससे आप स्वस्थ रहेंगे. दूसरों को प्रभावित करने के लिए अतिरिक्त पैसा खर्च न करें। स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए अपने भाई की मदद लें।

मकर-: आज आपकी आमदनी में वृद्धि होने की संभावना है, कार्यक्षेत्र में लाभ होगा. एकाग्रता बनाए रखें। आज आपके दोस्त आपको शराब की आदत से छुटकारा दिला सकते हैं।

कुंभ-: आज आपको किसी खास काम के चलते यात्रा पर जाना पड़ सकता है. किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मुलाकात के योग बन रहे हैं। कोई महत्वपूर्ण सुझाव आपको मिलेगा।

मीन-: आज आपकी आमदनी में वृद्धि होने की संभावना है, कार्यक्षेत्र में लाभ होगा. एकाग्रता बनाए रखें। आज आपके दोस्त आपको शराब की आदत से छुटकारा दिला सकते हैं।

भारत और श्रीलंका के बीच पहले खेली जाएगी टी20 सीरीज, BCCI ने जारी किया नया शेड्यूल

नई दिल्ली। भारत और श्रीलंका के बीच खेली जाने वाली सीरीज के कार्यक्रम में बदलाव हुआ है। भारत का दौरा करने वाली श्रीलंका की टीम भारत के साथ 3 टी20 और 2 टेस्ट मैच खेलने वाली

है। बीसीसीआइ ने मंगलवार को इस सीरीज के तय कार्यक्रम में बदलाव करने की घोषणा की। श्रीलंका की टीम भारत दौरे पर टेस्ट सीरीज पहले खेलने वाली थी इसके बाद टी20 मुकाबले होने थे। अब इस कार्यक्रम को उलटा कर दिया गया है। भारत के दौरे पर इसी महीने आने वाली श्रीलंका की टीम तीन टी20 मैचों की सीरीज को पहले खेलेगी। इसके बाद दो टेस्ट मैच खेले जाएंगे, जिसमें के आखिरी मुकाबला पिंक बाल टेस्ट यानी डे नाइट होगा। इस दौरे पर भारत के साथ श्रीलंका की टीम 24 फरवरी, 27 फरवरी और 27 फरवरी को टी20 मुकाबले खेलेगी। जबकि 4 मार्च से 8 मार्च के बीच पहला टेस्ट होगा। इसके ठीक बाद 12 मार्च से 16 मार्च तक दोनों टीम डे नाइट टेस्ट मैच खेलेगी। पहले भारतीय टीम को 25 से 1 मार्च के बीच मोहाली में बैंगलोर में पहला टेस्ट मैच खेलना था। इसके बाद दोनों टीमों के बीच 5 से 9 मार्च के बीच मोहाली में दूसरा टेस्ट मैच खेला जाना था। वहीं टी20 सीरीज का पहला मैच 13 मार्च को मोहाली में ही कराने की योजना थी। दूसरा मुकाबला धर्मशाला में 15 मार्च को खेला जाना था जबकि आखिरी 18 मार्च को लखनऊ में दोनों टीमों को आखिरी टी20 मुकाबला खेलना था। नए कार्यक्रम के मुताबिक टी20 सीरीज के मुकाबलों की मेजबानी लखनऊ और धर्मशाला को दी गई है। जबकि टेस्ट मैचों का आयोजन करने का जिम्मा मोहाली और बैंगलोर को मिला है। पहला मैच 24 फरवरी गुरुवार को लखनऊ में खेला जाएगा। इसके बाद के दोनों मुकाबले 26 फरवरी शनिवार और 27 फरवरी रविवार को धर्मशाला में खेले जाएंगे।

पिता थे मोची और मां बेचती थी चूडियां, अब आइपीएल नीलामी से बदल गई इस क्रिकेटर की जिंदगी

नई दिल्ली। आइपीएल की मेगा नीलामी में खिलाडियों पर करोड़ों की बोली को देखते हुए 20 लाख का अनुबंध भले ही बहुत बड़ी बात नहीं लगे, लेकिन टेनिस गेंद के क्रिकेट में नाम कमाने वाले रमेश कुमार के लिए यह राशि

काफी मायने रखती है। रमेश ने इस राशि के साथ सुनिश्चित किया कि उनके पिता को अब आजीविका कमाने के लिए मोची का काम नहीं करना होगा और ना ही उनकी मां को पंजाब के फाजिल्का जिले में चूडियां बेचने के लिए एक गांव से दूसरे गांव में घूमना पड़ेगा टेनिस गेंद के क्रिकेट में 'नारायण जलालाबाद' के नाम से मशहूर रमेश गेंद और बल्ले से अपने खेल से पहले ही यूट्यूब पर स्टार हैं। पिछले सप्ताहांत नीलामी में कोलकाता नाइटराइडर्स के साथ अनुबंध के बाद उनकी कहानी अधिक लोगों के पास पहुंची है। रमेश ने इससे पहले भी कई बार अपने उम्रदराज माता-पिता को काम बंद करने को कहा, लेकिन उन्होंने कभी उनकी बात नहीं सुनी। आइपीएल करार मिलने के बाद वे मान गए कि उनके बेटे का खेल में भविष्य है और उन्हें गली-गली भटकने की जरूरत नहीं है। स्थानीय टूर्नामेंट में एक बार 10 गेंदों में अर्धशतक जड़ने वाले रमेश ने कहा, 'वे अब काम नहीं करने के लिए राजी हो गए। मैं कभी नहीं चाहता था कि वे ये काम करें, लेकिन मजबूरी में यह काम करना पड़ा। रमेश आइपीएल से मिलने वाले पैसों का इस्तेमाल अपने छोटे भाइयों की शिक्षा के लिए भी करना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 'अब तक जीवन नहीं बदला है। जीवन तब बदलेगा जब मैं आइपीएल में प्रदर्शन करूंगा। मैं इसे इस तरह देखता हूं कि मुझे वह मंच मिल गया जिसकी मुझे जरूरत थी।' जलालाबाद के 23 वर्षीय रमेश ने सात साल तक देश के टेनिस गेंद टूर्नामेंट में अपना जौहर दिखाया, लेकिन पिछले साल ही उन्होंने 'लैदर गेंद' से खेलना शुरू किया। रमेश ने पंजाब क्रिकेट संघ के जिला स्तर के टूर्नामेंट में प्रभावित किया जिसके बाद उन्हें रणजी ट्राफी शिविर के लिए बुलाया गया। रमेश अपने करियर का श्रेय पंजाब के बल्लेबाज और आइपीएल में नियमित रूप से खेलने वाले गुरकीरत मान को देते हैं जिन्होंने उन्हें मुंबई में नाइटराइडर्स के ट्रायल में पहुंचाने में मदद की। नाइटराइडर्स के कोच और पूर्व भारतीय आलराउंडर अभिषेक नायर भी रमेश से प्रभावित हुए जिसके बाद टीम ने उन्हें उनके आधार मूल्य पर खरीदा। रमेश ने बताया कि कैसे वह टेनिस गेंद के टूर्नामेंट में दिन के 500 से 1000 रुपये कमाने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करते थे और इसी के कारण उन्हें पहली बार विमान में बैठने का मौका भी मिला।

सम्पादकीय

दुनिया में वही समाज आगे बढ़ता है, जो समय के साथ प्रतिगामी प्रथाओं का परित्याग करता है

कर्नाटक के उडुपी शहर के एक सरकारी स्कूल से उभरे हिजाब विवाद को इस रूप में पेश करने के लिए अतिरिक्त मेहनत और शरारत की जा रही है कि भारत में मुस्लिम अल्पसंख्यकों पर आफत आ गई है। जिन दिनों यह विवाद सुलग रहा था, उन्हीं दिनों यानी इसी 4 फरवरी को सुप्रीम कोर्ट की ओर से दिए गए एक फैसले का संज्ञान लेना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि एक तो वह देश के सबसे लघु या कहें कि सूक्ष्म अल्पसंख्यक वर्ग-पारसी समुदाय से जुड़ा है और दूसरे इसलिए भी कि उससे यह पता चलता है कि परिपक्व एवंप्रगतिशील समाज किस तरह देश, काल और परिस्थितियों के हिसाब से अपनी पुरातन-प्रतिगामी परंपराओं में परिवर्तन करता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में पारसी समुदाय की आबादी करीब 57 हजार है। 1941 में उनकी आबादी 1.14 लाख थी। पारसियों की आबादी तेजी से बढ़े, इसके लिए भारत सरकार का अल्पसंख्यक मंत्रालय 'जियो पारसी' नाम से एक योजना चला रहा है। इस योजना के चलते 2020 में जब यह आंकड़ा सामने आया कि पारसी समुदाय में 61 बच्चों का जन्म हुआ तो इसे एक उपलब्धि माना गया, लेकिन आज विषय यह नहीं कि यह योजना कितनी प्रभावी है? विषय यह है कि जब कोरोना से जान गंवाने वालों के अंतिम संस्कार को लेकर प्रोटोकाल जारी हुआ तो मुख्यतः महाराष्ट्र और गुजरात में सीमित पारसी समुदाय के सामने संकट खड़ा हो गया। इसलिए खड़ा हो गया, क्योंकि यह समुदाय अपने लोगों के शव को एक ऊंची मीनार की छत पर रख देता है ताकि कौए, गिद्ध आदि उसका भक्षण कर लें और जो अवशेष रहे, वह सूर्य की गर्मी से सूख जाए। इस तरह की मीनार को 'टावर आफ साइलेंस' कहते हैं। कोरोना काल में यह खतरा उभर आया कि अगर कोविड से मरे किसी पारसी के शव को पक्षी खाएंगे तो वे संक्रमण फैलाएंगे। इसलिए गुजरात प्रशासन ने इस पर रोक लगा दी। पारसी समाज के लोग गुजरात हाईकोर्ट गए। वहां से उन्हें राहत नहीं मिली तो वे सुप्रीम कोर्ट आए, बिना यह शोर मचाए कि उन पर जुल्म हो रहा है या उनकी परंपराओं को खत्म करने की साजिश हो रही है। कोई पारसी न तो सड़कों पर उतरा, न किसी ने मुस्लिम नेताओं और मौलानाओं की तरह यह कहा कि हमारी परंपरा में हस्तक्षेप हुआ तो हम बर्दाश्त नहीं करेंगे और न ही यह जिद की कि फैसला हमारे धर्मग्रंथ के हिसाब से ही हो। सुप्रीम कोर्ट में मामले की सुनवाई के दौरान सालिसिटर जनरल को समस्या का कोई समाधान निकालने की जिम्मेदारी सौंपी गई। उन्होंने पारसी समुदाय के लोगों से बात की और फिर उनकी सहमति से यह तय किया कि यदि उनके समाज का कोई व्यक्ति कोरोना से मरता है तो उसका शव टावर आफ साइलेंस पर तो रखा जाएगा, लेकिन टावर की ऊपरी सतह पर लोहे की एक जाली लगा दी जाएगी, ताकि पक्षी शव तक न पहुंच सकें। कायदे से देखें तो समस्या समाधान का यह उपाय पारसी समुदाय की सदियों पुरानी परंपरा में परिवर्तन का वाहक बना, लेकिन इस समुदाय ने हालात को समझते हुए इस बदलाव को स्वीकार कर लिया। सुप्रीम कोर्ट ने पारसी समुदाय की सराहना करते हुए मामले का निस्तारण कर दिया। देश इस सबसे इसलिए अनभिज्ञ सा रहा, क्योंकि न तो इंटरनेट मीडिया पर पारसी समुदाय के लोगों ने कोई अभियान छेड़ा और न ही एकाध लोगों को छोड़कर किसी ने यह कहा कि उनके संविधान प्रदत्त अधिकारों का हनन हो रहा है। दुनिया का कोई समाज ऐसा नहीं, जो प्रतिगामी या आज के युग की प्रतिकूल परंपराओं से न बंधा हो, लेकिन ज्यादातर समुदाय ऐसी परंपराओं को छोड़ रहे हैं। हिंदू समाज घूंघट प्रथा से करीब-करीब मुक्त हो रहा है। अभी चंद दिनों पहले राजस्थान के मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं विधायक संयम लोढ़ा ने घोषणा की कि उनकी विधानसभा की जिस ग्राम पंचायत में एक भी महिला घूंघट नहीं करेगी, उसे 25 लाख का पुरस्कार दिया जाएगा। राहुल और प्रियंका ने हिजाब की पैरवी करना पंसद किया। शायद उन्होंने शाहबानो मामले में अपने पिता की गलती से कोई सबक नहीं सीखा। उनकी मर्जी। बात पारसी समुदाय की हो रही थी।

आप खुद तय कीजिए कि खुद को समाजवादी नेता कहने वाले असल में कितने समाजवादी रह गए हैं

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल में समाजवादी पार्टी को नकली समाजवादी करार दिया। इस टिप्पणी के पक्ष और विपक्ष में विचार आने स्वाभाविक हैं। सवाल है कि किन कसौटियों पर असली समाजवादियों की पहचान की जाए इस देश में समाजवाद के मुख्यत तीन प्रतीक पुरुष रहे हैं-आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण और डा.राममनोहर लोहिया। इन तीनों की जीवनशैली, चाल, चरित्र और चिंतन की कसौटी पर आज के समाजवादियों को आसानी से कसा जा सकता है। आज के समाजवादी इन हस्तियों का यदाकदा नाम लेते रहते हैं, पर उनका कितना अनुसरण करते हैं, इसे देखा जाना चाहिए। ये तीनों कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापकों में प्रमुख थे। आजादी की लड़ाई के दिनों में ये और इनके अनुयायी एक साथ कांग्रेस में भी थे और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में भी। आजादी के तत्काल बाद कांग्रेस ने इन समाजवादियों से कहा कि या तो आप लोग कांग्रेस में शामिल हो जाइए या फिर उसे छोड़ दीजिए। एक साथ दो जगह नहीं रह सकते। नतीजतन कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सदस्यों ने कांग्रेस का त्याग करके सोशलिस्ट पार्टी बना ली। इसके पहले कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के 13 सदस्य कांग्रेस के टिकट पर 1946 में उत्तर प्रदेश विधानसभा के लिए चुने गए थे। उनमें आचार्य नरेंद्र देव भी थे। आचार्य और 12 विधायकों ने नैतिकता के आधार पर विधानसभा की सदस्यता भी छोड़ दी। वैसे इस्तीफा देने की संवैधानिक मजबूरी नहीं थी। तब दलबदल विरोधी कानून भी नहीं था। इन लोगों ने उपचुनाव लड़ा। एक को छोड़कर आचार्यजी सहित सभी हार गए। आचार्यजी से कई नेताओं ने कहा था कि कांग्रेस की अब भी हवा है। उपचुनाव नहीं जीत पाएंगे, किंतु उनके लिए जीत-हार से अधिक नैतिकता प्रिय थी। उपचुनाव में उनके क्षेत्र में यह प्रचार किया गया कि वह नास्तिक हैं। इन्हें वोट मत दीजिए। आचार्य जी ने इस का खंडन नहीं किया, क्योंकि वह नास्तिक ही थे। उनके प्रतिद्वंद्वी बाबा राघवदास ने उन्हें हरा दिया। आचार्य जी वही हस्ती थे, जिन्होंने नेहरूजी के कहने पर इंदिरा के बेटों का नामकरण किया था-राजीव और संजय। उन्होंने नेहरूजी की किताब 'डिस्कवरी आफ इंडिया' का संपादन भी किया था। राममनोहर लोहिया ने शादी नहीं की और न ही घर बसाया, क्योंकि उनका मानना था कि जिन्हें सार्वजनिक जीवन में जाना है, उन्हें शादी नहीं करनी चाहिए। आज राजनीति में परिवारवाद की महामारी को देखने से लगता है कि लोहियाजी यह जान गए थे कि एक दिन यही सब होने वाला है, इसलिए इसे अभी से रोकना चाहिए। इन दिनों तो ऐसी बुराइयों के कारण राजनीतिक दल एक-एक कर मुरझाते जा रहे हैं। इसके बावजूद उन दलों को इसकी कोई परवाह नहीं। संसद सदस्य रहने के बावजूद लोहियाजी ने कार नहीं खरीदी। वह कहते थे कि कार की साज-संभाल लायक मेरी आय नहीं है। वह यह जान गए थे कि नेताओं को आय से अधिक खर्च करने की आदत पड़ जाएगी तो देश घोटालों में डूब जाएगा। मुलायम सिंह यादव लोहियाजी के जीवनकाल में ही यानी 1967 में विधायक बन चुके थे। भले ही आज के समाजवादी नेता लोहियाजी की शैली से अनजान हों, लेकिन मुलायम ने उनकी जीवन शैली और राजनीतिक शैली को काफी नजदीक से देखा था। लोहियाजी का नारा था-'पिछड़े पावें सौ में साठ।' हालांकि वे ऊंची जातियों के विरोधी नहीं थे। उनके जितने भी निजी सचिव हुए, सबके सब ब्राह्मण थे। आज के समाजवादी नेता जातीय-सांप्रदायिक वोट बैंक के किले में सुरक्षित हैं। लोहियाजी ने एक बार एक ऐसे व्यक्ति को पार्टी छोड़ देने को कहा था कि जिसकी दुकान में शराब बिकती थी। रांची के उस व्यक्ति ने शराब का व्यापार छोड़ दिया, पर पार्टी नहीं छोड़ी। लोहियाजी ने 1967 के चुनाव से पहले कहा था कि मैं समान नागरिक संहिता के पक्ष में हूं। इस पर उनके एक साथी ने कहा कि यह आपने क्या कह दिया अब तो आप चुनाव हार जाएंगे। इस पर लोहियाजी ने कहा कि मैं सिर्फ चुनाव जीतने के लिए राजनीति नहीं करता। देश बनाने के लिए राजनीति करता हूं। उस बयान के बाद वह करीब 400 मतों से चुनाव जीत सके। सामान नागरिक संहिता की बात संविधान के नीति निदेशक तत्वों में है। आज कितने समाजवादी लोहियाजी की यह बात कहने को तैयार हैं। 1967 की चौधरी चरण सिंह सरकार में लोहियाजी की पार्टी की ओर से रामस्वरूप वर्मा भी मंत्री थे। उन दिनों लोहियाजी कानपुर गए। सर्किट हाउस में ठहरे थे। वर्माजी उनसे मिलने गए। जब जाने लगे तो लोहियाजी उन्हें दरवाजे तक छोड गए। मंत्री की कार को देखकर पूछा, झंडा लगी कार किसकी है वर्मा ने कहा कि मैं ही इसमें आया हूं। इस पर लोहिया ने कहा कि जब तुम कारों में चलोगे तो कांग्रेसियों और तुममें क्या फर्क रह जाएगा अब एक अन्य समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण की नीतियों और जीवन शैली की चर्चा की जाए। आजादी के बाद जवाहरलाल नेहरू ने जयप्रकाश नारायण से सरकार चलाने में सहयोग देने की अपील की। दरअसल वह चाहते थे कि जेपी उनकी सरकार में शामिल हों। इस पर जेपी ने नेहरूजी को अपनी 14 सूत्रीय मांग की सूची थमा दी। उसमें निजी बैंकों के राष्ट्रीयकरण की भी मांग थी। नेहरूजी ने कहा कि यह सब लागू करना अभी संभव नहीं है। नतीजतन कांग्रेस समाजवादी सहयोग की बात आगे नहीं बढ़ी। आज के समाजवादियों को इस कसौटी पर कसकर देखें बिहार आंदोलन के समय जेपी ने इंदिरा सरकार के भ्रष्टाचार के विरोध में आवाज उठाते हुए कहा था कि वह एकाधिकारवाद की ओर बढ़ रही है। उसके जवाब में इंदिरा गांधी ने कहा कि जो लोग पूंजीपतियों से पैसे लेते हैं, उन्हें भ्रष्टाचार के खिलाफ बोलने का नैतिक अधिकार नहीं है। इसके बाद जेपी ने अपने रोजाना के खर्चे का विवरण सार्वजनिक कर दिया। उस विवरण के अनुसार मैग्सेसे अवार्ड के पैसे बैंक में जमा थे, जिसके ब्याज से उनका खर्च चलता था। पुश्तैनी गांव की खेती से उपजा अनाज उनके पास आता था। जेपी ने अपने लिए कहीं कोई मकान नहीं बनवाया, किंतु देश में उनकी साख थी। इसी कारण 1975-77 के बिहार आंदोलन चलाने के लिए आसानी से चंदा मिल जाता था। क्या आज के समाजवादी जेपी की जीवन शैली अपनाने को तैयार हैं आप खुद तय कर लीजिए कि आज खुद को समाजवादी नेता कहने वाले दरअसल कितने समाजवादी रह गए हैं।

यूक्रेन में रूसी हस्तक्षेप से तीसरे विश्व युद्ध का गहराता संकट और अंतरराष्ट्रीय कानून

रूस और यूक्रेन विवाद इस समय पूरी दुनिया में चर्चा का विषय है। रूस के आक्रामक रुख और यूक्रेन के खिलाफ हमले की आशंका ने विश्व में अशांति और असुरक्षा का परिवेश निर्मित किया है। वैश्विक पटल पर चिंता है कि यदि रूस यूक्रेन पर कोई सैन्य कार्रवाई या हमला करता है तो उसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। आज जिस प्रकार के वैश्विक समीकरण बन रहे हैं, उससे यह भी स्पष्ट है कि इस मुद्दे पर विभिन्न देशों में मतभेद हैं। ऐसे में इस मसले का समाधान तलाशने और इस भौगोलिक क्षेत्र में शांति कायम करने के लिए संयुक्त राष्ट्र को अपनी ओर से पहल करनी चाहिए। वर्तमान में जारी रूस-यूक्रेन तनातनी की पृष्ठभूमि को देखें तो रूस का यूक्रेन से लंबे समय से चल रहा तनाव है जो 2014 में रूस द्वारा क्रीमिया पर किए कब्जे से पैदा हुआ था। हालांकि हालिया गतिरोध का एक मुख्य कारण यूक्रेन का नाटो यानी नार्थ अटलांटिक देशों के समूह में शामिल होने का निर्णय है जिससे रूस नाराज है। दरअसल रूस नाटो में यूक्रेन के शामिल होने को अपने लिए खतरे के रूप में देखता है। रूस को भय है कि यूक्रेन के नाटो में शामिल होने से नाटो देशों का हस्तक्षेप व प्रभाव रूसी क्षेत्र में बढ़ जाएगा जिससे रूसी हितों व संप्रभुता को खतरा पैदा हो सकता है। रूस ने धमकी दी है कि यदि यूक्रेन नाटो में शामिल हुआ और पूर्वी यूरोप में तैनात नाटो सैनिकों की संख्या कम नहीं की गई तो रूस सैन्य कार्रवाई करेगा। उधर अमेरिका और पश्चिमी देशों ने भी अपना रुख स्पष्ट कर रूस को चेताया है कि किसी भी सैन्य कार्रवाई की स्थिति में रूस को आर्थिक पाबंदियां व जवाबी कार्रवाई झेलनी पड़ेगी। प्रथम दृष्टया इस संकट को कोई प्रत्यक्ष उत्प्रेरक नहीं है और यह संकट मुख्य रूप से अदृश्य आंतरिक दबावों से उपजा हुआ प्रतीत होता है। रूसी राष्ट्रपति पुतिन का देश में राजनीतिक संस्थाओं व मीडिया पर सरकारी नियंत्रण बढ़ाना और रूस में राष्ट्रीयता की भावना के बढ? से रूस ने यूक्रेन सहित कई पूर्ववर्ती सोवियत देशों में अपने हित साधने शुरू दिए हैं। रूसी सरकार पश्चिमी देशों को भी संदेह की दृष्टि से देखती है और उन पर राजनीतिक एजेंडा चलाने का आरोप लगाती रही है। पुतिन ने संभवतः पश्चिमी देशों की एकता में बिखराव व कमजोर नेतृत्व के चलते नाटो की शक्ति और निश्चय को परखने का यह सही समय चुना है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों के आकलन से यह स्पष्ट है कि यूक्रेन पर रूसी हमले से नाटो का पूर्वी यूरोप में दखल और बढ़ जाएगा। साथ ही रूस दुनिया में अलग थलग होकर चीन पर और अधिक निर्भर हो जाएगा। यदि ऐसा हुआ तो यह रूस के नाटो को पूर्वी यूरोप से दूर रखने के लक्ष्य पर कुठाराघात होने के साथ ही चीन के प्रति रूसी जनता, जो चीन को एक खतरे के रूप में देखती है, उसके भय को और बढ़ा देगा। इस संकट का लंबे समय से कायम यूरोप की स्थिरता पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। ऐसा अनुमान है कि रूस यूक्रेन को न केवल नाटो में शामिल होने से रोकना चाहता है, अपितु उसकी विदेश व रक्षा नीति पर भी नियंत्रण कर अंतरराष्ट्रीय संबंधों को सीमित करना चाहता है। रूस इस बात से भी व्यथित है कि पिछले आठ वर्षो से चल रहा संघर्ष भी यूक्रेन को रूस की तरफ झुकाकर उसका पश्चिमी देशों के प्रभाव वाले यूरोपीय संघ की तरफ झुकाव रोक नहीं सका। यूक्रेन समस्या का समाधान न केवल दोनों देशों के, बल्कि समस्त यूरोपीय क्षेत्र व विश्व के हित में है। इस मामले को सुलझाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयास जारी हैं और अमेरिका सहित अन्य कई देश राजनीतिक हस्तक्षेप व कूटनीति से इस मामले का हल खोजने को प्रयासरत हैं। परंतु अभी इस समस्या का कोई समाधान नजर नहीं आ रहा। ऐसे में प्रश्न यह पैदा होता है कि मौजूदा मसले का हल किस प्रकार निकल अंतरराष्ट्रीय कानून और संस्थाओं की इसमें क्या भूमिका हो सकती है देखा जाए तो संयुक्त राष्ट्र की इस मामले में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। संयुक्त राष्ट्र शांति व व्यवस्था बनाए रखने के लिए अपने मुख्य अंगों की सहायता से कार्य करता है व राष्ट्रों द्वारा एक दूसरे की संप्रभुता व अखंडता का सम्मान करना इसका मुख्य सिद्धांत है। इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र का मुख्य कार्यकारी अंग सुरक्षा परिषद सदैव कार्यरत रहता है। विश्व में कहीं भी शांति का उल्लंघन हो या होने की आशंका हो तो मामले का संज्ञान लेकर उचित कार्रवाई की संस्तुति करना उसकी जिम्मेदारी है। सुरक्षा परिषद द्वारा मामले का संज्ञान लेने के लिए आवश्यक नहीं कि देशों के बीच संघर्ष प्रारंभ ही हो गया हो, अपितु संघर्ष आरंभ होने की आशंका प्रतीत होने पर भी सुरक्षा परिषद को इसका संज्ञान लेना होता है। यदि विश्व में कहीं भी हालात ऐसे बन रहे हों कि देशों के मध्य संघर्ष की आशंका हो तो भी सुरक्षा परिषद को संज्ञान लेकर सदस्य देशों को उचित कार्रवाई की संस्तुति करनी चाहिए। पूर्व में अनेक बार ऐसा हुआ है कि दो या अधिक देशों के मध्य उपजे विवाद को सुरक्षा परिषद ने वैश्विक शांति व सुरक्षा के लिए खतरा माना है। यहां तक कि अनेक मामलों में किसी देश की आंतरिक अशांति को भी वैश्विक शांति व सुरक्षा के लिए खतरा मान कर कार्रवाई की संस्तुति की गई है। हैती, सूडान समेत अन्य कई मामलों में सुरक्षा परिषद यह रुख अपना चुकी है।किसी मामले का संज्ञान लेकर यदि सुरक्षा परिषद इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि वह स्थिति वैश्विक शांति व सुरक्षा के लिए खतरा है तो सुरक्षा परिषद संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अध्याय छह और सात के अनुसार कार्रवाई की संस्तुति कर सकती है। सर्वप्रथम वह शांतिपूर्ण उपायों जैसे मध्यस्थता इत्यादी द्वारा मामले का हल निकालने का प्रयास करती है। परंतु यदि इन प्रयासों से मामले का हल न निकले तो सुरक्षा परिषद अध्याय सात से अनुसार प्रवर्तन उपायों जिसमें संघर्ष विराम और यथास्थिति बनाए रखने के अतिरिक्त कूटनीतिक व आर्थिक प्रतिबंध लगाने और बल के प्रयोग की संस्तुति कर सकती है। अमेरिका और नाटो के संयुक्त मोर्चे के रुख से उम्मीद है कि रूस यूक्रेन के विरुद्ध किसी भी सैन्य कार्रवाई से बचेगा, क्योंकि इसकी प्रतिक्रिया अवश्य होगी। सुरक्षा परिषद व अन्य राष्ट्रों को भी प्रयास कर रूस और यूक्रेन दोनों देशों को अपनी अपनी सेनाओं को सीमा से वापस बुला कर संयुक्त राष्ट्र की शांति सेनाओं से क्षेत्र की निगरानी करनी चाहिए। इससे समस्या के स्थायी समाधान का रास्ता निकलेगा और फिलहाल विश्व में तृतीय विश्व युद्ध की आशंका दूर होगी।

यूक्रेन और रूस में जारी तनातनी को रोकने के लिए शांति के लिए पहल करे भारत

इस समय यूरोप शीत युद्ध के बाद सबसे नाजुक दौर से गुजर रहा है। हालांकि यूक्रेन संकट 2014 से चल रहा है, परंतु इस बार नाटो के विस्तार के बारे में रूसी चिंताएं, विशेष रूप से यूक्रेन की संभावित नाटो सदस्यता और पूर्वी यूरोप में नाटो बलों की तैनाती रूस के आक्रामक रुख के मुख्य कारण हैं। यद्यपि तनाव को कम करने के लिए कूटनीतिक पहल चल रही है, तथापि रूस का रवैया आक्रामक बना हुआ है। रूस के साथ अपने पुराने संबंधों और अमेरिका व पश्चिमी देशों के साथ बढ़ते संबंधों को देखते हुए भारत सतर्क रुख अपना रहा है। यूक्रेन संकट के संदर्भ में ऐसा प्रतीत होता है कि भारत के पास अधिक विकल्प नहीं हैं। एक तरफ रूस भारत का करीबी दोस्त है। घनिष्ठ आर्थिक और व्यापारिक संबंधों के अलावा भारतीय सशस्त्र बलों का लगभग 60 प्रतिशत हार्डवेयर रूस से प्राप्त है। निकट भविष्य में, सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल रक्षा प्रणाली एस-400 ट्रायंफ जैसे रूसी हथियार भारत को मिलने की संभावना है। वहीं, पिछले वर्षो के दौरान अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ आर्थिक, व्यापार, प्रौद्योगिकी, रक्षा जैसे क्षेत्रों में भारत के संबंधों में काफी सुधार हुआ है। इसलिए उभरती तनावपूर्ण स्थिति भारत के द्विपक्षीय संबंधों को जटिल बना सकती है और रूस से हथियार आयात करने में मुश्किलें पैदा कर सकती हैं। इसके अलावा, भारत के चीन के साथ संबंध तनावपूर्ण हैं। भारत चीन को नियंत्रित करने के लिए इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में विश्व का ध्यान आकर्षित करने में काफी सफल रहा है। लेकिन यूक्रेन संकट के कारण, सभी का ध्यान और संसाधनों को यूरेशिया की ओर मोड़ा जा रहा है। साथ ही, अगर भारत रूस के खिलाफ कोई पक्ष लेता है, तो आशंका है कि रूस चीन के साथ और करीब आ जाएगा। यह चीन के खिलाफ भारत के रणनीतिक प्रयासों को कमजोर कर सकता है। रूस प्रतिबंधों के प्रभाव को कम करने और अपने रक्षा-औद्योगिक क्षेत्र को चलाने के लिए पाकिस्तान को और अधिक हथियारों की आपूर्ति शुरू कर सकता है। यह भारत के लिए अच्छा नहीं होगा। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और कई यूरोपीय नेताओं ने बार-बार चेतावनी दी है कि यूक्रेन में सैन्य हस्तक्षेप के मामले में रूस को बड़े पैमाने पर आर्थिक परिणाम भुगतने होंगे। अगर ऐसा होता है तो इसका सीधा और परोक्ष असर भारत पर भी पड़ेगा। जब अमेरिका और उसके सहयोगियों ने परमाणु कार्यक्रम के कारण ईरान पर प्रतिबंध लगाए, तो भारत पर भी ईरान के खिलाफ इसी तरह की कार्रवाई करने का दबाव था। किसी भी गंभीर आर्थिक प्रतिबंध का प्रतिकार करने के लिए, रूस तेल और गैस की आपूर्ति रोककर यूरोप को झटका दे सकता है। इसका असर भारत समेत पूरी दुनिया पर पड़ेगा। तेल की कीमतों में और तेजी आ सकती है। ऐसे में यदि रूस यूक्रेन पर हमला करता है, तो भारत को रूस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग-थलग करने के लिए अमेरिका से संभावित कूटनीतिक दबाव के लिए तैयार रहना चाहिए। भारत इस बात से भी परेशान है कि पश्चिमी देशों द्वारा प्रस्तावित प्रतिबंध रूस के साथ उसके रक्षा व्यापार और अन्य सहयोगों को कैसे प्रभावित कर सकते हैं। हालांकि भारत को अपने घरेलू मामलों में हस्तक्षेप पसंद नहीं है और हमेशा दूसरे देश के मुद्दों में तटस्थता बनाए रखता है, लेकिन यूक्रेन संकट पर वह एक सूत्रधार की भूमिका निभा सकता है, क्योंकि वर्तमान में भारत के सभी पक्षों के साथ अच्छे संबंध हैं। इतना ही नहीं, भारत अपनी उभरती वैश्विक नेतृत्व भूमिका को देखते हुए अधिक योगदान दे सकता है। भारत पक्ष नहीं लेगा, लेकिन कूटनीति को एक मौका देकर संबंधित पक्षों के बीच मतभेदों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने की पहल कर सकता है।

संक्षिप्त समाचार

मनी लान्ड्रिंग मामले में ने छोटा शकील के सहयोगी सलीम कुरैशी को तलब किया

मुंबई। से जुड़े मनी लान्ड्रिंग मामले में छोटा शकील के सहयोगी सलीम कुरैशी को प्रवर्तन निदेशालय ने तलब किया है। बता दें कि मंगलवार को छोटा शकील और सलीम कुरैशी से ईडी ने नौ घंटे तक पूछताछ की थी। इसके अलावा दाऊद इब्राहिम की बहन हसीना पारकर के मुंबई स्थित आवास पर भी छापेमारी की गई थी। कल मुंबई में ईडी ने करीब 10 स्थानों पर छापेमारी की थी। प्रिवेंशन आफ मनी लान्ड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत ये कार्रवाई की गई थी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के कम से कम 70 अधिकारियों ने मंगलवार को मुंबई में 10 परिसरों की तलाशी ली, जिसमें दाऊद इब्राहिम के भाई इकबाल कास्कर, छोटा शकील के बहनोई सलीम फ्रूट और इब्राहिम की बहन हसीना पारकर के बेटे के आवास शामिल हैं। गौरतलब है कि अंडरवर्ल्ड और मनी लान्ड्रिंग से जुड़े मामलों में प्रवर्तन निदेशालय मुंबई में छापेमारी कर रहा है। इस केस में कुछ अंडरवर्ल्ड भगोड़े औरराजनेताओं की भी जांच चल रही है। ईडी को मिली कुछ खुफिया सूचनाओं और राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) द्वारा दर्ज प्राथमिकी के आधार पर ये कार्रवाई की जा रही है।

पाटीदार नेता हार्दिक पटेल ने खटखटाया गुजरात हाइकोर्ट का दरवाजा, जानें क्या है मामला

अहमदाबाद। पाटीदार नेता हार्दिक पटेल ने आरक्षण आंदोलन के दौरान विधायक के कार्यालय में तोड़फोड़ व आगजनी के मामले में निचली अदालत के फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। हार्दिक साल के अंत में सरकार के मंत्री के खिलाफ विधानसभा चुनाव लड़ना चाहते हैं। गुजरात उच्च न्यायालय में याचिका दाखिल कर हार्दिक के वकील ने अदालत से विसनगर की 2015 की घटना को लेकर निचली अदालत की ओर से दोषी माने जाने को निरस्त करने की मांग की गई है। न्यायाधीश बी एन कारिया इस मामले की सुनवाई 28 फरवरी को करेंगे। आरक्षण आंदोलन के दौरान भाजपा विधायक के कार्यालय में तोड़फोड़ व आगजनी मामले में विसनगर सत्र अदालत ने हार्दिक को जुलाई 2018 में दो साल की सजा सुनाई थी, बाद में कार्यकारी अध्यक्ष बन गये। पिछले लोकसभा चुनाव से पहले भी हार्दिक की ओर से ऐसी ही याचिका दाखिल की गई थी। हाईकोर्ट ने सजा के अमल पर रोक लगा दी थी। हार्दिक इस मामले में दोषमुक्ति की मांग कर रहे हैं। चूंकि जनप्रतिनिधी कानून के अनुसार दो साल या इससे अधिक की सजा होने पर कोई भी व्यक्ति विधानसभा व लोकसभा का चुनाव नहीं लड़ सकता है।

लालू यादव के लिए प्रोडक्शन वारंट की गुहार, पटना की सीबीआइ अदालत में वकील ने लगाई अर्जी

पटना। राजद अध्यक्ष लालू यादव के लिए चारा घोटाला की मुसीबत कम होने का नाम ही नहीं रहा है। दिलचस्प बात है कि इस मामले के कई आरोपित ट्रायल के दौरान ही मर चुके हैं। लालू यादव

ले रही है। मंगलवार को उन्हें डोरंडा कोषागार मामले में दोषी ठहराते हुए रांची की अदालत ने न्यायिक हिरासत में भेज दिया। ठीक एक दिन बाद यानी बुधवार को चारा घोटाले के भागलपुर और बांका कोषागार से अवैध निकासी के मामले में सुनवाई होनी है। यह मामला पटना की अदालत में चल को एक दिन पहले ही डोरंडा ट्रेजरी केस में दोषी ठहराते हुए सजा के बिंदु पर फैसले तक के लिए न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। उन्हें पहले होटवार जेल ले जाया गया। इसके बाद कोर्ट के निर्देश पर उन्हें रिम्स में भर्ती कराया गया। लालू ने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देकर खुद को रिम्स में रखने का अनुरोध किया था। करीब एक साल पहले वे होटवार जेल से रिहा हुए थे। उन्हें चारा घोटाले के एक अन्य मामले में आधी सजा पूरी करने के बाद खराब स्वास्थ्य के आधार पर जमानत मंजूर की गई थी। आशु पाल संबंधित पशुपालन घोटाला से संबंधित एक मामले में सीबीआई के विशेष न्यायाधीश प्रजेश कुमार सिंह की अदालत में बुधवार को कांड संख्या आरसी 63 (ए)/96 में सुनवाई हुई। मामले में आरोपित पूर्व मुख्यमंत्री व राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की ओर से अधिवक्ता सुधीर कुमार सिन्हा ने अदालत में एक आवेदन देकर प्रोडक्शन वारंट जारी करने की मांग की है। इस संबंध में लालू प्रसाद यादव के अधिवक्ता सुधीर कुमार सिन्हा ने बताया कि लालू प्रसाद यादव अभी 47 (ए)/96 में बिरसा मुंडा होटवार रांची जेल में हैं। जिस मामले में प्रोडक्शन वारंट जारी करने की मांग की गयी है, यह मामला आरसी 63(ए)/96 से जुड़ा है। यह मामला भागलपुर के बांका कोषागार से 46 लाख रुपये का अवैध निकासी का है। इस मामले में लालू प्रसाद यादव समेत 26 लोगों के खिलाफ इस अदालत में सुनवाई चल रही है।

बिना नाम लिए कुमार विश्वास ने किया अरविंद केजरीवाल पर अब तक का सबसे बड़ा राजनीतिक हमला

गाजियाबाद। आनलाइन डेस्क। पंजाब विधानसभा चुनाव 2022 के लिए आगामी रविवार को मतदान होना है, लेकिन उससे पहले राजनीतिक पूरी तरह से गरमा गई है। आम आदमी पार्टी के पक्ष में चुनाव प्रचार में जुटे दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल पर कांग्रेस के साथ-साथ भारतीय जनता पार्टी भी लगातार हमलावर है। इस बीच आम आदमी पार्टी के संस्थापक सदस्य, पूर्व नेता और देश के जाने माने कवि कुमार विश्वास ने आरोप लगाया है कि दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल पंजाब में अलगाववादियों के समर्थक थे। समाचार एजेंसी एएनआइ से बातचीत में कुमार विश्वास ने पुरानी दिनों का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने (अरविंद केजरीवाल ने) मुझसे कहा कि वह या तो (पंजाब के) मुख्यमंत्री बनेंगे या एक स्वतंत्र राष्ट्र (खालिस्तान) के पहले पीएम बनेंगे।'समझना चाहिए कि वो कोई स्टेट नहीं है, एक इमोशन है। मैं सदा कहता हूं कि पंजाब कोई राज्य नहीं, बल्कि पंजाब एक भावना है। पंजाबियत एक भावना है पूरी दुनिया में। ऐसे में एक ऐसा आदमी जिसने एक समय मुझे यह तक कहा था कि जब मैंने उससे कहा था जो अलगाववादी संगठन हैं, जो खालिस्तानी मूवमेंट से जुड़े हुए लोग

जाऊंगा। आज भी उसी पथ पर हैं और नहीं भी हैं तो वह पोपेट बैठा लेगा। ऐसे में उसने अचानक भयानक बातें बोलीं जो कि सबको पता हैं। एक दिन तो मुझसे कहता है कि किसी भी कीमत पर मुझे सरकार मिले सत्ता मिले।' गौरतलब है कि वर्ष 2012 में भष्टाचार के खिलाफ शुरू हुए अनन आंदोलन के दौरान मशहूर कवि कुमार विश्वास और अरविंद केजरीवाल साथ थे। इतना ही नहीं, जब आम आदमी पार्टी का गठन हुआ तो कुमार विश्वास भी संस्थापक सदस्यों में शुमार थे। दिल्ली में सत्ता में आने के बाद कुमार विश्वास के संबंध आम आदमी पार्टी के कई नेताओं के साथ अरविंद केजरीवाल से भी खराब होने लगे। इसके बाद उन्होंने आम आदमी पार्टी से पूरी तरह से दूरी बना ली है, लेकिन पार्टी से विधिवत इस्तीफा नहीं दिया है। अरविंद केजरीवाल के साथ मतभेदों के चलते से दूरी बनाने वाले कुमार विश्वास पिछले कई सालों से आम आदमी पार्टी सरकार की कई नीतियों के आलोचना करते रहे हैं। कुछ दिन पहले पंजाब में चुनाव प्रचार के दौरान अरविंद केजरीवाल पर हमला करते हुए राहुल गांधी ने बरनाला रैली में कहा था कि चाहे कुछ भी हो कांग्रेस का कोई नेता आपको कभी किसी आतंकवादी के घर नहीं दिखेगा। झाड़ू का चुनाव निशान का सबसे बड़ा नेता एक आतंकवादी के घर पर पाया जा सकता है, यही सच्चाई है। इसके साथ ही अरविंद केजरीवाल पर आतंकियों के प्रति नरम रुख रखने और राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर अविश्वसनीय होने का आरोप लगाया है। दरअसल, राहुल गांधी के इस बयान को अरविंद केजरीवाल पर बड़ा हमला माना जा रहा है। बता दें कि अरविंद केजरीवाल पर 2017 के चुनावों के दौरान आतंकी के घर रुकने का आरोप लगा था। इशारों-इशारों में इसी बात का जिक्र करते हुए और अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने दावा कि सरकार बनाने के लिए एक मौका मांगने वाले लोग पंजाब को नष्ट कर देंगे और राज्य जल उठेगा।

राजस्थान के पांच हजार स्टूडेंट्स यूक्रेन में फंसे, परेशान परिजन ने बताया देश लौटे तो उनका साल हो जाएगा खराब

उदयपुर। रूस और यूक्रेन के बीच बढ़ते तनाव बढ़ता जा रहा है। भारतीय दूतावास ने वहां रह रहे भारतीयों को देश लौटने के निर्देश दिए हैं। इससे यूक्रेन में रह रहे भारतीयों के परिजनों की मुश्किल बढ़ गई है। यूक्रेन में राजस्थान के पांच हजार से अधिक बच्चे पढ़ते हैं, जिनमें 90 फीसदी से अधिक बच्चे मेडिकल स्टूडेंट्स

हैं। जिन्हें बताया गया कि वह देश छोड़कर गए तो उनकी अनुपस्थिति लगाई जाएगी और ऐसे में उनके साल बिगड़ने की आशंका है। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध की आशंका को देखते हुए पेरेंट्स यूक्रेन में पढ़ रहे अपने बच्चों के लगातार संपर्क में हैं। भारतीय दूतावास के यूक्रेन छोड़कर भारत लौटने की सलाह के बाद यूक्रेन में पढ़ रहे स्टूडेंट्स के पेरेंट्स की मुश्किल बढ़ गई है। उदयपुर के संजीव खाब्या का कहना है कि उनका बेटा जय यूक्रेन में रहकर मेडिकल की पढ़ाई कर रहा है। यूक्रेन में ऑनलाइन पढ़ाई बंद करके ऑनलाइन कक्षाएं शुरू होने जा रही है। ऐसे में यदि जय को उदयपुर बुलाया तो उसकी गैरहाजिरी लगा दी जाएगी और उसका एक साल बिगड़ जाएगा। इसी तरह उदयपुर से करीब चार सौ से अधिक ऐसे बच्चे है, जो यूक्रेन में रहकर मेडिकल की पढ़ाई कर रहे है। वहीं, उदयपुर के विनित सोजतिया बताते है कि यूक्रेन में लगभग पांच हजार राजस्थानी बच्चे पढ़ रहे है। जो यूक्रेन की विनित्सिया की मेडिकल यूनिवर्सिटी में पढ़ रहे हैं। जिनमें उदयपुर के अलावा जयपुर, जोधपुर, अजमेर और कोटा शहरों के बच्चे बड़ी संख्या हैं। विश्वविद्यालय ने स्टूडेंट्स को सूचित किया है कि 25 फरवरी के बाद ऑनलाइन क्लासेज शुरू होगी। बताया गया कि एक हजार से अधिक बच्चों ने पहले भारत लौटने के लिए टिकट बुक करा ली थी लेकिन बाद में युद्ध की आशंका टलने के चलते फिलहाल उन्होंने बुकिंग कैंसल करा दी है।हालांकि इस सब के परिजन अभी भी बेहद परेशान हैं। रूस से तनाव के बीच यूक्रेन में भारतीय स्टूडेंट पढ़ाई कर रहें हैं। जनवरी के आखिरी दिनों में भारत सरकार की ओर से यूक्रेन में रहने वाले अपने नागरिकों को कीव स्थित भारतीय दूतावास में खुद को रजिस्टर करने को कहा गया था। जिससे जरूरत पड़ने पर जल्द मदद पहुंचाई जा सकेगी। भारत से पढ़ने गए ज्यादातर छात्र पश्चिमी यूक्रेन में रहते हैं। वहीं यूक्रेन में तनाव की हालत पूर्वी बॉर्डर पर है। यूक्रेन में पढ़ रहे भारतीय छात्रों का कहना है कि मौजूदा समय में देश के मेडिकल कॉलेजों में करीब में 88 हजार सीटें हैं। इसके लिए 8 लाख से ज्यादा बच्चे परीक्षा में बैठते हैं। दूसरी ओर यूक्रेन के मेडिकल कॉलेज में आसानी से दाखिला मिल जाता है। कमोबेश यही हाल इंजीनियरिंग की पढ़ाई का भी है। राजस्थान कांग्रेस के नेता द्वारा दायर याचिका में कहा गया है कि देश भर से 18,000 से 20,000 भारतीय छात्र अध्ययन के लिए यूक्रेन के विभिन्न विश्वविद्यालयों में गए हैं। उनके जीवन से जुड़े इस गंभीर मुद्दे पर अभी तक भारत सरकार की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई है। राजस्थान के करीब एक हजार छात्र यूक्रेन में भी मौजूद हैं।

पूर्णिया के अवर निबंधक के घर निगरानी का छापा मिले- इतने लाख रुपये कैश और ज्वेलरी

पूर्णिया। निगरानी ने बुधवार की सुबह बड़ी कार्रवाई की है। पूर्णिया के अवर निबंधक उर्मिलेश

कुमार के पूर्णिया और पटना स्थस्ति आवास की तलाशी ली जा रही है। पूर्णिया स्थति आवास से चार लाख 27 हजार छह सौ रुपये बरामद की गई है। साथ ही निगरानी के अधिकारियों ने अलग-अलग बैंकों के छह पासबुक भी जब्त किए हैं। इन बैंकों में 25 लाख से ज्यादा की राशि जमा है। अवर निबंधक के घर से लाखों रुपये के इन्वेस्टमेंट पेपर और जेवरात भी मिले हैं। निगरानी ने उर्मिलेश कुमार के खिलाफ आय से अधिक संपति का मामला दर्ज किया है। उनके पटना के राजीव नगर स्थित आवास पर भी छापेमारी हो रही है। उर्मिलेश रोहतास जिले के रहने वाले हैं।

यूपी में बीजेपी का मतलब बहन बेटियों की सुरक्षा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

(आधुनिक समाचार सेवा)
आशीष त्रिवेदी

सीतापुर। जिले की 9 विधानसभा में 23 फरवरी को होने वाले मतदान में भाजपा प्रत्याशियों के पक्ष में ग्रास फार्म के में आयोजित जनसभा को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया संबोधित अपनी उत्तर प्रदेश योगी सरकार ने जनता को मिलने वाली सुविधाओं आवास, शौचालय, आयुष्मान योजना , मुफ्त मिल रही कोरोना वैक्सीन व राशन आदि मिल रही सुविधाओं का गुणगान करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपाकी उत्तर प्रदेश सरकार में बेटियां सुरक्षित है उत्तर प्रदेश में योगी कार्यकाल में अपराधियों

को भयभीत होना पड़ा है।

पूर्व विधायक व भाजपा नेता सहित सौ से अधिक के खिलाफ आचार संहिता उल्लंघन में विभिन्न धाराओ में मुकदमा दर्ज किया-मेजा

(आधुनिक समाचार सेवा)
संजय द्विवेदी

मेजा प्रयागराज। विधान सभा मेजा में पूर्व विधायक रामसेवक पटेल ने आचार संहिता का उल्लंघन में मुकदमा दर्ज हुआ पूर्व विधायक रामसेवक पटेल की जुबान फीसली रुपया पैसा जूता चप्पल दारू आदि किसी भी प्रलोभन से बूथ स्तर पर जीत दिलाने की अपील करते हुए

पूर्व विधायक रामसेवक पटेल का वीडियो वायरल होने पर दरोगा के तहरीर पर आचार संहिता एवं जातिगत वैमनस्य फैलाने सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है।मंगलवार को थाने के दरोगा राम बहादुर सिंह ने थाने में तहरीर दी की थाना क्षेत्र के लक्षन चौखटा कार्यालय पर अपने दल का प्रचार प्रसार करने के लिए पूर्व विधायक बारा रामसेवक सिंह पटेल अपने 150 समर्थकों से वायरल वीडियो में अपील करते हुए दिखे की पैसा रुपया^ होगी।दंगा फसाद व अन्य विधि विरुद्ध तरीके अपनाने की भाषा प्रयोग करते हुए कोविड-19 महामारी एवं चुनाव आचार संहिता उल्लंघन वीडियो में पाया गया। दरोगा के तहरीर पर 188 269 270 153 आईपीसी व 171ठएचठलोक प्रतिनिधित्व अधिनियम व तीन महामारी अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर पुलिस मामले की विवेचना कर रही है। इसके पूर्व 28 जनवरी को भी जब पूर्व विधायक रामसेवक पटेल सपा में थे उस समय भी उनके खिलाफ 250 सपाइयों सहित आचार संहिता उल्लंघन का मुकदमा दर्ज हुआ था उसके बाद भाजपा में आने के बाद अब उनके साथ 150 भाजपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ आचार संहिता उल्लंघन का मुकदमा दर्ज किया गया।

चौकी डाला पुलिस द्वारा फर्जी परमिट बनाकर अवैध बालू परिवहन करने वाले 01 नफर अभियुक्त को किया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनिल कुमार अग्रहरि

डाला सोनभद्र। पुलिस उपमहानिरीक्षक/पुलिस अधीक्षक सोनभद्र श्री अमरेन्द्र प्रसाद सिंह के कुशल निर्देशन में जनपद में

अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान में अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय व क्षेत्राधिकारी नगर के निकट पर्यवेक्षण में चौकी डाला पुलिस द्वारा फर्जी परमिट बनाकर अवैध बालू परिवहन करने से सम्बन्धित मामले में थाना चोपन पर पंजीकृत मु0अ0सं0-50/2022, धारा-419,420,467,468,471 भादवि व लोक सम्पत्ति क्षति निवारण अधि0 से सम्बन्धित 01 नफर अभियुक्त गुलाब प्रसाद उर्फ छोटू पुत्र बेचू निवासी विसरेखी थाना घोरावल सोनभद्र को आज दिनांक 16.02.2022 को डाला बैरियर के पास से समय करीब 10.30 बजे गिरफ्तार कर मा0 न्यायालय भेजा गया । गिरफ्तार अभियुक्त- 1 गुलाब प्रसाद उर्फ छोटू पुत्र बेचू निवासी विसरेखी थाना घोरावल सोनभद्र । गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम- 1- उ0नि0 मनोज कुमार ठाकुर चौकी प्रभारी डाला,थाना चोपन,सोनभद्र । 2- हे0का0 परमेन्द्र राय चौकी डाला,थाना चोपन,सोनभद्र ।

सहेजी जाएंगी हिमालय की विलुप्त हो रही जड़ी बूटियां हिमाचल का पहला जैव विविधता पार्क तैयार

शिमला। जिला मंडी की जंजैहली घाटी में स्थित भूलाह में हिमालय की दुलर्भ जड़ी बूटियों को संरक्षण होगा। एक करोड़ की लागत से तैयार इस पार्क से देश-विदेश के शोधकर्ताओं, पर्यटकों और विलुप्त हो रही बूटियों को संरक्षण मिलेगा। यह प्रदेश का पहला बायोडायवर्सिटी पार्क (जैव विविधता उद्यान) है। इसे हिमाचल प्रदेश वन विभाग की ओर से नेशनल मिशन आन हिमालयन स्टडीज (एनएमएचएस) प्रोजेक्ट के तहत बनाया गया है। पार्क को पर्यटन गतिविधियों से जोड के साथ शोधकर्ताओं के लिए हिमालय में पाई जाने वाली विभिन्न औषधीय जड़ी-बूटियों (हर्बल प्लांट्स) पर शोध करने के नए मौके देने के लिए भी तैयार किया है। पार्क में प्रदर्शन के लिए पहाड़ों में विलुप्त हो रही जड़ी बूटियों की हर्बल नर्सरी तैयार की है। इसमें नाग छतरी, धूप, कडू सर्पगंधा, चिरायता, टैक्स, बर्बरी चैरा, पठानबेल, पत्थर चटा भूतकेसी, न्यार, मुश्कवाला, वण अजवायण, कूठ व वर्रे, संसरपाली डोरी घास, रतन जोत, अतीश पतीश, वन ककड़ी, शिंगली मिगली जगली लहसुन, डुंगतली इत्यादि जड़ी बूटियां प्रदर्शित की हैं। यहां उस जड़ी बूटी पर भी खोज कार्य किया जा सकेगा, जिनकी अभी तक कोई पहचान नहीं हो पाई है। नर्सरी में विभिनन्-प्रजातियों के 1200 पौधे उपलब्ध है।मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के विधानसभा क्षेत्र में स्थापित पार्क को पांच हेक्टेयर 60 बीघा से अधिक भूमि पर तैयार किया है। इससे मुख्यमंत्री का विजन भी साकार हुआ है। पार्क को चारों ओर से बाड़बंदी कर सुरक्षित बनाया है। पार्क में एम्फी थियेटर बनाया है, जहां पहाड़ी क्षेत्रों में उगने वाली जड़ी बूटियों के बारे में जानकारी हासिल की जा सकेगी। देश-विदेश से आने वाले शोधकर्ताओं के लिए रहने व खाने की व्यवस्था के लिए दो लाग हट बनाए है। दो लाग्स हट, वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर, इंटरनल टैंक,

पांच किलो वाट बिजली तैयार करने वाला प्रोजेक्ट, एम्फी थिएटर, पक्षियों के घोंसले, हर्बल नर्सरी, फूट ब्रिज व बिक्री केंद्र इत्यादि तैयार किया है। पर्यटकों के लिए पार्क में दो ट्री हट तैयार किए गए है, जहां से वे पार्क सहित अन्य रमणीक स्थलों को निहार सकते हैं। इसके अलावा करीब दो किलोमीटर की दूरी तक नेचर ट्रेल्स बनाई है। 25 फीट ऊंची व 160 मीटर लंबी ट्री वाक तैयार की गई है। सात फुट ब्रिज बनाए है। पार्क के साथ लगते जंगल में शोधकर्ताओं के लिए इंटरनल ट्रैक बनाया गया है।

अंसल बंधुओं को दिल्ली हाई कोर्ट से झटका खारिज की सजा निलंबन की मांग वाली याचिका

नई दिल्ली। उपहार सिनेमा कांड दिल्ली हाई कोर्ट ने अहम फैसला सुनाया है। उम्र के आधार पर उपहार अग्निकांड से जुड़े सुबूतों से छेड़छाड़ के मामले में निचली अदालत के फैसले पर राहत की

मांग करने वाले अंसल बंधुओं को दिल्ली हाई कोर्ट से झटका लगा है। न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद की पीठ ने सजा को निलंबित करने की मांग वाली सुशील अंसल और गोपाल अंसल की अपील याचिका को बुधवार को खारिज कर दिया। मामले में अदालत का पूरा निर्णय जल्द ही अपलोड किया जाएगा। पीठ ने 27 जनवरी को सभी पक्षों की दलील सुनने के बाद अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। अंसल बंधुओं की तरफ से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने दलील दी थी कि दोषसिद्धि के बाद बेगुनाही का अनुमान जैसी कोई बात नहीं है, लेकिन कोई भी प्रणाली पहले दोषसिद्धि को अंतिम नहीं मानती है। उन्होंने कहा था कि भारतीय दंड संहिता प्रक्रिया की धारा-389 की उपस्थिति अपीलकर्ता को जमानत पर रिहा करना, जबकि सजा का निलंबन अपील लंबित है का अर्थ यह है कि अपील लंबित रहने के दौरान निरंतर कारावास का कोई अनुमान नहीं है। सिंघवी ने अदालत से व्यक्तिगत स्वतंत्रता कोरोना की वास्तविकता और याचिकाकर्ताओं की संबंधित उम्र को ध्यान रखते हुए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने का अनुरोध किया था। वहीं, इससे पहले अभियोजन पक्ष ने दलील दी थी कि सुबूतों के साथ छेड़छाड़ में शामिल होने के कारण मुकदमे में देरी के लिए अंसल भाई खुद जिम्मेदार हैं और अब वे जेल की अवधि को निलंबित करने की मांग नहीं कर सकते। दिसंबर माह में पटियाला हाउस की सत्र अदालत ने मजिस्ट्रेट अदालत द्वारा दोषी करार दिए जाने के बाद सात साल की सजा को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी थी। साथ ही जमानत देने से इन्कार कर दिया था। सुशील अंसल और गोपाल अंसल ने उम्र का हवाला देकर सजा निलंबित करने की मांग की है 1997 के उपहार अग्निकांड से जुड़े सबूतों के साथ छेड़छाड़ के मामले में पटियाला हाउस कोर्ट के मेट्रोपानिटल मजिस्ट्रेट पंकज शर्मा ने अंसल बंधुओं पर 2.25-2.25 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाते हुए सात-सात साल की सजा सुनाई थी। इसके अलावा अदालत ने मामले में अदालत के कर्मचारी रहे दोषी दिनेश चंद शर्मा व दो अन्य दोषी पीपी बत्रा एवं अनूप सिंह को भी सात सजा सुनाते हुए तीन-तीन लाख रुपये जुर्माना भी लगाया था। मामले में दो आरोपितों हर स्वरूप पंवार और धर्मवीर मल्होत्रा की सुनवाई के दौरान मौत हो गई थी। सुबूतों से छेड़छाड़ का मामला 20 जुलाई 2002 को पहली बार तब सामने आया था जब दिनेश चंद शर्मा के खिलाफ विभागीय जांच शुरू की गई। दिनेश को पहले निलंबित किया गया और फिर 25 जून 2004 को सेवाओं से बर्खास्त कर दिया गया था। अभियोजन पक्ष ने कहा कि बर्खास्तगी के बाद अंसल बंधुओं ने शर्मा को 15 हजार रुपये मासिक वेतन पर रोजगार दिलाने में भी मदद की थी। इस मामले में आरोप पत्र दाखिल कर दिल्ली पुलिस ने माना था कि अंसल बंधुओं द्वारा सुबूतों के साथ छेड़छाड़ करने से आपराधिक न्याय प्रणाली में आम आदमी का विश्वास कम हुआ है। उस समय शहर का सबसे संवेदनशील मामला था और ऐसे मामले में दस्तावेजों के साथ छेड़छाड़ को हल्के में नहीं लिया जा सकता था। पुलिस ने आरोप पत्र में कहा था कि छेड़छाड़ किए गए दस्तावेजों में घटना के तुरंत बाद बरामदगी का विवरण देने वाला एक पुलिस मेमो, उपहार के अंदर स्थापित ट्रांसफार्मर की मरम्मत से संबंधित दिल्ली फायर सर्विस रिकार्ड, प्रबंध निदेशक की बैठकों के मिनट और चार चेक शामिल थे। उपहार सिनेमाघर में बार्डर फिल्म की स्क्रीनिंग के दौरान आग लगने से 59 लोगों की मौत हो गई थी। इस मामले में सुशील और गोपाल अंसल को दोषी ठहराया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें दो साल की सजा सुनाई थी, लेकिन उनके उम्र व जेल में बिताए गए समय को ध्यान में रखते 30-30 करोड़ रुपये बतौर देने की शर्त रिहा कर दिया था। मामले की सुनवाई के दौरान दो आरोपित हर स्वरूप पंवार व धर्मवीर मल्होत्रा की मौत हो गई थी।

'आई एम ए डिस्को डांसर' से लेकर 'ऊह ला ला', अपनी आवाज देकर बप्पी लहरी ने इन गानों को बना दिया एवरग्रीन

नई दिल्ली। हिंदी सिनेमा के दिग्गज गायक और म्यूजिक कंपोजर बप्पी लहरी अब इस दुनिया में नहीं रहे। उन्होंने मुंबई के एक अस्पताल में आखिरी सांस

ली है। वह 69 साल के थे। बप्पी लहरी ने बॉलीवुड के कई गानों में शानदार संगीत दिया था। उन्होंने कई फिल्मों से हिट गाने भी गाए थे, जिसे दर्शकों ने खूब पसंद किया था। बप्पी लहरी को फिल्म इंडस्ट्री में सभी लोग बप्पी दा के नाम से जानते थे। आज हम आपको बप्पी लहरी की आवाज में गाए सुपरहिट गानों से रूबरू करवाते है बप्पी लहरी ने पहली बार साल 1979 में आई फिल्म सुरक्षा के लिए गाना गाया था। उनके इस गाने ने दर्शकों के बीच काफी लोकप्रियता बटोरी थी। 'मौसम है गाने का, गुनगुनाने का' गाने को अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती पर फिल्माया गया था। इस गाने ने बप्पी लहरी को रातों रात एक सफल म्यूजिक डायरेक्टर बना दिया था। यह गाना मिथुन चक्रवर्ती की फिल्म डिस्को डांसर का है। फिल्म आई एम ए डिस्को डांसर साल 1982 में आई थी, जिसे दर्शकों ने काफी सराहा था। फिल्म के गाने भी काफी हिट हुए थे। जिसका म्यूजिक बप्पी लहरी ने दिया था। बप्पी लहरी ने यह गाना साल 1985 में आई फिल्म साहेब के लिए गाया था। इस गाने को अभिनेता अनिल कपूर पर फिल्माया गया था। इस गाने को आज भी संगीत प्रेमी खूब पसंद करते हैं। यह गाना संजय दत्त और माधुरी दीक्षित की हिट फिल्म थानेदार का है। यह फिल्म साल 1990 में आई थी। दर्शकों ने इस फिल्म को जितना पसंद किया था उतना की यह गानों दर्शकों के दिलों पर छाया रहा। 'तम्मा तम्मा लोगे' गाने को साल 2017 में वरुण धवन की बद्रीनाथ की दुल्हनिया में रिक्रिएट किया गया था। लंबे अंतराल के बाद बप्पी लहरी ने विद्या बालन, इमरान हाशमी और नसीरुद्दीन शाह की फिल्म डर्टी पिक्चर के लिए गाना गाया था। यह फिल्म साल 2011 में सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। बप्पी लहरी के इस गाने को फैंस ने खूब पसंद किया था। बप्पी लहरी ने इस सुपरहिट गाने को फिल्म गुंडे के लिए गाना गाया था। इस गाने को अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा, अभिनेता रणबीर सिंह और अर्जुन कपूर पर फिल्माया गया था। यह फिल्म गुंडे साल 2013 में आई थी। इनके अलावा बप्पी लहरी ने और भी कई हिट गाने गाने, जो आज भी लाखों दर्शकों के पहली पसंद बने हुए हैं। वह 80 और 90 के दशक में सबसे ज्यादा हिंदी सिनेमा में सक्रिय रहे। उन्होंने कई बड़े गायकों के साथ काम किया और हिंदी की दुनिया में अपनी अमिट छाप छोड़ी थी।

देबिना बनर्जी ने पति गुरमीत चौधरी संग खास अंदाज में मनाई वेडिंग एनिवर्सरी

नई दिल्ली। टेलीविजन के जाने-माने अभिनेता गुरमीत चौधरी और देबिना बनर्जी इस साल पैरेंट बनने वाले हैं। देबिना बनर्जी प्रेगनेंट हैं, जिसकी जानकारी खुद गुरमीत चौधरी ने अपने सोशल मीडिया

के जरिए दी। देबिना के लिए ये साल डबल सेलिब्रेशन का मौका है। देबिना बनर्जी प्रेगनेंट होने के साथ-साथ अपने पति गुरमीत चौधरी के साथ एक और प्यार भरा साल सेलिब्रेट करती हुई नजर आ रही है। दोनों की आज वेडिंग एनिवर्सरी है, जिसे दोनों ने बहुत ही खास अंदाज में डांस करते हुए सेलिब्रेट किया और सितारों ने भी इनकी वेडिंग एनिवर्सरी पर उन्हें बधाई दी। गुरमीत चौधरी और देबिना बनर्जी ने खास अंदाज में अपनी शादी की सालगिरह मनाई। देबिना और गुरमीत ने वायरल गाने 'कच्चा बादाम' पर डांस करते हुए एक वीडियो पोस्ट किया। इस वीडियो में दोनों ने एक जैसी टी-शर्ट पहनी हुई है और दोनों ही बहुत क्यूट लग रहे हैं। देबिना बनर्जी के बेबी बम के साथ-साथ उनके चेहरे का ग्लो भी देखते ही बन रहा है। लोगों को इन दोनों का ट्रेंडिंग गाने 'कच्चा बादाम' पर ये डांस वीडियो बहुत ही पसंद आ रहा है। इस वीडियो को शेयर करते हुए देबिना ने कैप्शन में लिखा, 'हमें शादी की सालगिरह मुबारक हो। हमने हमेशा एक-दूसरे का हाथ और साथ पकड़कर अच्छे और बुरे समय को साथ में काटा है। एक और नए साल का साथ में स्वागत करने से बेहतर और क्या होगा। यह बहुत ही प्यारी और ट्रेंडिंग डांस रील है'। देबिना बनर्जी और गुरमीत चौधरी की वेडिंग एनिवर्सरी के मौके पर फैन्स के साथ-साथ सितारों ने भी दोनों को इस वीडियो पर कमेंट करके बधाई दी। मौनी रॉय ने लिखा, 'शादी की सालगिरह मुबारक हो'। करण वीर मेहरा ने कमेंट करते हुए लिखा, 'दोनों बहुत प्यारे लग रहे हो।

अर्जुन कपूर ने 'कुत्ते' की शूटिंग पूरी होते किया लुक चेंज, कहा- 'ये फिल्म मेरे लिए हमेशा खास रहेगी

नई दिल्ली। बॉलीवुड अभिनेता अर्जुन कपूर अपनी पर्सनल लाइफ के चलते काफी सुर्खियों में रहते है। वो अक्सर सोशल मीडिया पर अपने फोटो वीडियो शेयर कर

अपनी आगामी फिल्म से जुड़े अपडेट भी शेयर करते रहते हैं। अब उन्होंने जानकारी दी है उन्होंने अपनी फिल्म 'कुत्ते' के शूटिंग को खत्म कर लिया है अर्जुन ने मंगलवार को अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में वो अपने शॉट्स को फिल्म ने के बाद थककर सोफे पर बैठ कर गहरी सांस ले रहे हैं और अंत में उन्होंने अपने रीयल लुक साझा किया है। इस वीडियो को इंस्टाग्राम पर शेयर कर अभिनेता ने लिखा, 'आज मेरी 17 फिल्में पूरी हो गई हैं। ये एक रोमांचक और विन्रम प्रक्रिया रही है, जिसने मुझे इतने सारे किरदार निभाने और जीवन जीने का मौका दिया है। आकशा भारद्वाज आपके और आपकी पूरी टीम के साथ काम करना और आपके शानदार आइडिया को करीब से देखना काफी मजेदार था। मुझे यकीन है कि आप एक ऐसी फिल्म बनाएंगे जो सभी लोगों को पसंद आएगी। अर्जुन कपूर ने आगे लिखा, 'आपके द्वारा बनाई गई फिल्म कुत्ते दुनिया को दिखाने के लिए लोगों का इंतजार नहीं कर सकता। फिल्म कुत्ते की शूटिंग खत्म, लुक चेंज लेकिन एक प्रोजेक्ट की ऊर्जा आपके अंदर रहती है और ये फिल्म मेरे लिए हमेशा खास रहेगी। हाल ही में अभिनेता ने न्यूज एजेंसी आईएएनएस से बात चीत के दौरान खुलासा करते हुए बताया कि, मुझे लगता है कि जब भी मैं कुत्ते के सेट पर होता हूं। तो मुझे लगता है कि फिल्म जगत में मेरा पहला दिन है, क्योंकि हर दिन कुछ-ना-कुछ सीखने का शानदार अनुभव होता है। इन मझे हुए कलाकारों हर सीन में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते देख। मैं काफी प्रेरित होता हूं। आकाश भारद्वाज के निर्देशन में बन रही इस फिल्म में अर्जुन कपूर एक पुलिस कॉन्स्टेबल के किरदार में नजर आने वाले है, जबकि एक्ट्रेस तब्बू एक कपर्ट महिला पुलिस कॉन्स्टेबल के किरदार में नजर आने वाले है। वहीं राधिका मदान एक कॉलेज स्टूडेंट का रोल निभाती हुई दिखाई देंगी। फिल्म में कोंकण सेन शर्मा और नसीरूद्दीन शाह भी अहम किरदार में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म को लव फिल्म्स और विशाल भारद्वाज फिल्मस के बैनर तले बनाया जा रहा है। वही, फिल्म को टी सीरीज द्वारा प्रस्तुत किया गया है। आपको बता दें, अर्जुन कपूर फिल्म कुत्ते के अलावा मोहित सूरी की फिल्म एक विलेन रिटर्न्स, द लेडी किलर जैसी फिल्मों भी मुख्य किरदार में नजर आने वाले है।

13 साल बाद फिर लौट रही हैं तुलसी वीरानी, एकता कपूर ने शेयर किया 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी.....

नई दिल्ली। एकता कपूर के मोस्ट पॉपुलर और लॉन्ग टाइम रनिंग शोज में से एक 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' लोगों का पसंदीदा शो रहा है। इस शो में तुलसी

वीरानी के किरदार से लेकर मिहिर वीरानी जैसे कई यादगार किरदार इस शो ने दिए। साल 2000 से लेकर 2008 तक इस शो ने लोगों के दिलों के साथ-साथ टीवी पर भी खूब राज किया और बड़े-बड़े रिकॉर्ड्स तोड़े। इस शो में स्मृति ईरानी ने तुलसी वीरानी का किरदार निभाया था। आज भी उनके किरदार की यादें लोगों के दिलों में ताजा हैं। 13 साल के बाद अब एक बार फिर से तुलसी वीरानी फैंस के दिलों पर राज करने के लिए लौट रही है।` अपने सोशल मीडिया हैंडल इंस्टाग्राम पर 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी का एक प्रोमो शेयर किया। इस प्रोमो को शेयर करते हुए एकता कपूर ने अपनी खुशी व्यक्त की। प्रोमो को शेयर करते हुए शो की निर्माता एकता कपूर ने कैप्शन में लिखा, 'इस प्रोमो की एक झलक देखकर ही सारी पुरानी यादें ताजा हो गई। आज जब भी मैं पीछे पलटकर देखती हूं, मुझे सब कुछ याद आ जाता है। वह हर पल मुझे याद आता है जिसकी वजह से इस शो को इतना ज्यादा प्यार मिला है।

कपिल शर्मा ने माधुरी दीक्षित से डॉ नेने को लेकर पूछा ये सवाल

नई दिल्ली। टीवी का पाप्यूलर कमेडी शो 'द कपिल शर्मा शो' अपने कॉन्टेंट से लोगों को खूब एंटरटेन करता है। शो में हर हफ्ते कई बड़े सेलिब्रिटीज शिरकत करते हैं और अपनी प्रेजेंस से चार चांद लगाते

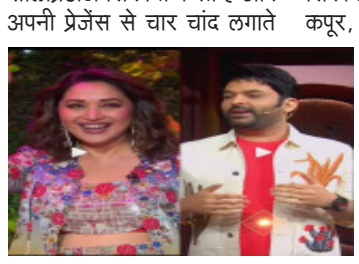

हैं। इसी कड़ी में इस बार शो की गेस्ट धक-धक गर्ल माधुरी दीक्षित होंगी। सोनी टीवी ने शो के अपकमिंग एपिसोड का प्रोमो शेयर किया है। जिसमें कपिल शर्मा, माधुरी से उनके पति डॉ श्रीराम नेने को लेकर कुछ मजेदार सवाल पूछते नजर आ रहे हैं। माधुरी दीक्षित जल्द ही वेब सीरीज 'फेम गेम' से ओटीटी प्लेटफार्म पर अपना डिजिटल डेब्यू करने जा रही हैं। जिसके प्रामोशन के लिए माधुरी और सीरीज के बाकी स्टार्स ने कपिल शर्मा के शो में शिरकत की। माधुरी के साथ संजय कपूर, मानव कौल, लक्षवीर सरन और मुस्कान जाफरी नजर आने वाले हैं। प्रोमो में माधुरी, कपिल का हाथ पकड़कर गाने 'पहला पहला प्यार है' पर डांस करते हुए एंट्री करती है। जिसके बाद कपिल उन्हें स्टेज तक ले जाते है और डॉ श्रीराम नेने के बारे में सवाल पूछते हुए कहते हैं, 'जब डॉ नेने ने पहली बार आपका हाथ पकड़ा था, उन्होन 'आई लव यू' बोला था या उन्होन बोला 'कोई और डॉक्टर बुलाओ, मेरी धड़कन तेज हो रही है।' कपिल का यह मजाकिया सवाल सुन माधुरी जोर-जोर से हंसने लगती हैं।

लायंसगेट प्ले ने किया दूसरी इंडिया ओरिजिनल वेब सीरीज का एलान, OTT पर दिखेगा सुमीत व्यास का 'जुगाडिस्तान'

नई दिल्ली। नेटफ्लिक्स और अमेजन प्राइम वीडियो के बाद पिछले साल एक और बड़े अमेरिकी

ओटीटी प्लेयर लायंसगेट प्ले ने भारतीय ओटीटी कंटेंट स्पेस में दस्तक देते हुए अपना पहला इंडियन ओरिजिनल शो हिक्कअप्स एंड हुकअप्स रिलीज किया था। यह शो नवम्बर में प्लेटफॉर्म पर स्ट्रीम किया गया था और अब लायंसगेट प्ले अपने दूसरे इंडियन ओरिजिनल शो जुगाडिस्तान के साथ तैयार है। मंगलवार को ओटीटी प्लेटफॉर्म ने अपने सोशल मीडिया एकाउंट्स के जरिए इस शो की पहली झलक साझा की और बताया कि शो जल्द लायंसगेट प्ले पर स्ट्रीम होने वाला है। यह युवाओं को टारगेट करके बनाया गया शो है, जिसमें सुमीत व्यास, परमव्रत चटर्जी, अर्जुन माथुर और रुखसार ढिल्लों मुख्य भूमिकाओं में दिखने वाले हैं। शो की थीम प्यार, दोस्ती और राजनीति पर आधारित है। शो आकर्ष खुराना ने किया है। सुमीत व्यास ने शो की पहली झलक करके लिखा- यह दुनिया है ना, यह सिर्फ जुगाड़ पे चलती है। चाहे पॉलिटिक्स हो या पढ़ाई, फ्रेंडशिप हो या रिलेशनशिप, हर काम के लिए यहां एक जुगाड़ चाहिए। शो 4 मार्च से लायंसगेट प्ले पर स्ट्रीम किया जाएगा। जुगाडिस्तान में कॉलेज पॉलिटिक्स की डार्कर साइड पर फोकस किया गया है।` स्थापित की गयी है। लायंसगेट प्ले पर फिलहाल अंग्रेजी टाइटल्स ही बड़ी संख्या में मौजूद हैं। लायंसगेट प्ले ने पिछले साल हिक्कअप्स एंड हुकअप्स के साथ इंडियन ओटीटी स्पेस में दस्तक दी थी।

'लव हॉस्टल' के ट्रेलर में दिखा बॉबी देओल का गुस्सैल और क्रूर अंदाज, वेलेंटाइन डे पर शाह रुख खान ने किया शेयर

नई दिल्ली। शाह रुख खान को बॉलीवुड का किंग ऑफ रोमांस कहा जाता है और वेलेंटाइन डे पर शाह रुख ने लगभग साढ़े चार महीनों बाद ट्विटर पर वापसी करते हुए लव हॉस्टल का ट्रेलर शेयर किया। लव हॉस्टल का निर्माण शाह रुख की कम्पनी रेड चिलीज एंटरटेनमेंट और दृश्यम फिल्म्स ने किया है। लव हॉस्टल हिंदी हार्टलैंड में स्थापित एक लव स्टोरी है, जिसमें विक्रांत मैसी और सान्या मल्होत्रा के किरदारों का प्यार

सामाजिक रस्मों-रिवाज के खिलाफ बगावत करता नजर आता है। शंकर रमन लिखित-निर्देशित फिल्म में विक्रांत और सान्या प्रेमी जोड़े के किरदारों में हैं, जो अपने प्यार को बचाने के लिए भाग रहे हैं, जबकि बॉबी देओल एक कॉन्ट्रेक्ट किलर के रोल में हैं, जो इन दोनों के पीछे पड़ा है। बॉबी का किरदार डागर इस ट्रेलर की हाइलाइट है। यह पहली बार है, जब चॉकलेटी किरदारों के लिए मशहूर रहे बॉबी इस अंदाज में नजर आ रहे हैं। बॉबी एक्शन तो पहले भी करते हैं, मगर डागर के किरदार में उनका लुक, गेटअप, भाषा और देह भाषा बिल्कुल अलग है। लव हॉस्टल 25 फरवरी को जी5 पर रिलीज की जाएगी। बॉबी ने अपने किरदार को लेकर कहा- ठडागर एक ऐसा किरदार है, जिसकी अपनी विचारधारा है और जो कोई भी इसके खिलाफ जाता है, उसे उसके गुस्से का सामना करना पड़ता है। वह एक क्रूर कॉन्ट्रेक्ट किलर है। जिस तरह से कैरेक्टर लिखा गया था, वह मुझे पसंद आया, यह मेरे द्वारा पहले निभाये गये किसी भी कैरेक्टर से बिल्कुल अलग है। सान्या मल्होत्रा ने लव हॉस्टल को एक शानदार और रोमांचक सफर बताया। वहीं, विक्रांत मैसी ने कहा कि यह एक ऐसी फिल्म है, जो रोमांस के साथ-साथ एक ऐसे कपल के बारे में है, जो बेकाबू ताकतों से भाग रहे हैं। लव हॉस्टल का ट्रेलर करने के साथ शाह रुख ने ट्विटर पर अपना लगभग साढ़े चार महीनों का वनवास खत्म किया है। उनके एकाउंट से पिछला ट्वीट 23 सितम्बर 2021 को किया गया था, मगर बेटे आर्यन खान के ड्रग केस में फंसने के बाद शाह रुख ने सोशल मीडिया से दूरी बना ली थी।

अ थर्सडे, मिथ्या, बेस्टसेलर समेत इस हफ्ते ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर आएंगी ये फिल्में और वेब सीरीज देखें पूरी लिस्ट

नई दिल्ली। फरवरी के तीसरे शुक्रवार को सिनेमाघरों में कोई नही फिल्म रिलीज नहीं हो रही है। पिछले हफ्ते रिलीज हुई हिंदी फिल्म बधाई दो अपना बॉक्स ऑफिस सफर जारी रखेगी। मगर, ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर नये कंटेंट की कमी नहीं होगी और इस हफ्ते कई दिलचस्प फिल्में और सीरीज

विभिन्न प्लेटफॉर्म्स पर स्ट्रीम होंगी। 17 फरवरी यानी गुरुवार को अ थर्सडे डिजने प्लस हॉटस्टार पर आएगी। इस थ्रिलर फिल्म में यामी गौतम लीड रोल में हैं, जो नैना जायसवाल नाम की प्ले स्कूल टीचर किरदार निभा रही हैं। इस फास पेस्ड थ्रिलर में यामी पहली बार एक डार्क कैरेक्टर में नजर आएंगी। ट्रेलर में दिखाया गया है कि नैना 16 बच्चों को किडनैप करके अपनी मांगें पूरी करने के लिए पुलिस प्रशासन को बाध्य करती है। फिल्म में नेहा धूपिया, डिम्पल कपाडिया और अतुल कुलकर्णी अहम किरदारों में नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन बेहजाद खंबाटा ने किया है, जबकि निर्माता आरएसवीपी और ब्लू मंकी फिल्मस हैं। 18 फरवरी को प्राइम पर वेब सीरीज बेस्टसेलर रिलीज होगी। वेटरन एक्टर मिथुन चक्रवर्ती का यह ओटीटी डेब्यू है। बेस्टसेलर एक मनोवैज्ञानिक थ्रिलर वेब सीरीज है, जिसका निर्देशन मुकुल अभ्यंकर ने किया है। आठ एपिसोड्स की सीरीज में मिथुन के साथ श्रुति हासन, अर्जन बाजवा, सत्यजीत दुबे और सोनाली कुलकर्णी अहम भूमिका में दिखेंगे। अन्विता दत्त और अल्थिया कौशल ने इसे लिखा है। 18 फरवरी को ही हुमा कुरैशी और अर्वतिका दसानी की वेब सीरीज मिथ्या जी5 पर रिलीज होगी। छह एपिसोड्स की साइकोलॉजिकल थ्रिलर वेब सीरीज की कहानी दार्जिलिंग में दिखायी गयी है, जहां हुमा कुरैशी का किरदार जूही विश्वविद्यालय में हिंदी लिटलेचर का प्रोफेसर है। अवंतिका दसानी का किरदार रिया राजगुरु स्टूडेंट है। रिया के निबंध को जूही प्लेजरिज्म बताती है और इसको लेकर इन दोनों के बीच मनोवैज्ञानिक लड़ाई शुरू हो जाती है, जो धीरे-धीरे खतरनाक होती जाती है। भाग्यश्री की बेटी अवंतिका का यह एक्टिंग डेब्यू है। 18 फरवरी को सोनी-लिव पर होमकमिंग फिल्म आ रही है। इस फिल्म की कहानी कोलकाता में सेट है, जहां कुछ दोस्त दुर्गा पूजा के अवसर पर सात सालों बाद दोबारा मिलते हैं और यादों के भंवर में डूबते-उतराते हैं। जहां वो थिएटर रिहर्सल करते थे, उस जगह को अब एक हेरिटेज होटल में तब्दील किया जा रहा है। फिल्म को हकीकत के करीब रखने के लिए बंगाली, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में संवाद रखे गये हैं। फिल्म में तुषार पांडेय, शायोनी गुप्ता, प्लाबिता बोरठाकुर, सोहम मजूमदार और हुसैन दलाल मुख्य भूमिकाओं में हैं। निर्देशन सौम्यजीत मजूमदार ने किया है, जिनका यह डिजिटल डेब्यू है। सौम्यजीत निर्माता भी हैं। नेटफ्लिक्स पर इस हफ्ते कोई हिंदी फिल्म या सीरीज तो रिलीज नहीं हो रही, मगर अंग्रेजी में कई फिल्में और सीरीज आ रही हैं। नेटफ्लिक्स की इस हफ्ते की स्लेट के मुताबिक टेक्सस- चेन सॉ मैसेकर फिल्म एस्केप रूम- टूर्नामेंट ऑफ चैंपियंस फिल्म, फिस्टफुल ऑफ वेंजेंस फिल्म, वन ऑफ अस इज लाइंग सीरीज, हार्ट शॉट फिल्म, फॉरगिव अस आवर ट्रेसपासेज फिल्म डाउनफॉल- द केस अगेंस्ट बोइंग फिल्म आ रही हैं।

दिग्गज संगीतकार बप्पी लहरी का निधन मुंबई के अस्पताल में ली अंतिम सांस

नई दिल्ली। बॉलीवुड के फेमस सिंगर व म्यूजिक डायरेक्टर बप्पी लहरी अब दुनिया में नहीं रहे। सिंगर ने 69 साल की उम्र में मुंबई

के एक अस्पताल में अंतिम सांस ली। उनके निधन की खबर से बॉलीवुड और म्यूजिक इंडस्ट्री में शो की लहर है। बॉलीवुड को शानदार म्यूजिक देने वाले बप्पी के के निधन ने उनके फैंस और स्टार्स के बुरी तरह से तोड़कर रख दिया है। वहीं इस खबर के सामने अपने के बाद सोशल मीडिया पर हर कोई उन्हें श्रद्धांजलि दे रहा है। बॉलीवुड को डिस्को म्यूजिक देने वाले बप्पी लहरी ने म्यूजिक के गाने आज भी हर किसी के जुबान पर है। अस्पताल के निदेशक के मुताबिक बीते एक महीने से बप्पी लहरी का इलाज चल रहा था और सोमवार को ही उन्हें डिस्चार्ज किया गया। लेकिन देर रात उनकी तबियत ज्यादा फिर से बिगड़ने की वजह से उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं डॉक्टर का कहना है कि ओएसए (ऑब्सट्रिक्टिव स्लीप एपनिया) के चलते ही बप्पी लहरी का निधन हुआ है। आपको बता दें कि बप्पी लहरी अपने पीछे एक भरा पूरा परिवार छोड़कर गए है। बप्पी के परिवार में उनकी पत्नी चित्रानी लहरी बेटा बप्पा लहरी, बेटी रीमा लहरी, एक पोते स्वास्तिक बंसल और बहू तनीषा वर्मा हैं। बप्पी लहरी का बेटा बप्पा लहरी भी पिता की तरह ही म्यूजिक इंडस्ट्री से जुड़े हैं। वह एक इंडियन फिल्म म्यूजिक डायरेक्टर है जोकि मुख्य तौर से हिंदी सिनेमा में सक्रिय हैं। बप्पी लहिरी ने महज 19 साल की उम्र में अपने करियर की शुरुआत की थी। मुंबई आने के बाद उन्हें पहला ब्रेक बंगाली फिल्म 'दादू' 1972 में मिल गया था। इसके बाद उन्होंने 1973 में फिल्म 'शिकारी' के लिए म्यूजिक कंपोज किया था। यही नहीं 1980 और 90 के दशक में उन्होंने कई जबरदस्त साउंड ट्रैक्स बनाए, इसमें 'वारदात' डिस्को डांसर', 'नमक हलाल', 'डांस डांस' 'कमांडो', 'गैग लीडर', 'शराबी' जैसी फिल्में शामिल रहीं। वहीं साल 2020 में फिल्म 'बागी 3' में उनका आखिरी बॉलीवुड गाना 'बंकस' था।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।